पाक्षिक

पाथेय कण

मूल्य १५

भाद्रपद कृष्ण १२, युगाब्द ५१२२ वि.२०७७,१६ अगस्त, २०२०

राष्ट्रीय पुनर्जागरण का प्रतीक
श्रीराम मंदिर

श्रीराम जन्मभूमि मंदिर निर्माण 'भूमि पूजन कार्यक्रम' की झलकियां

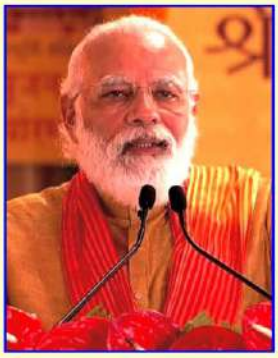

।। ॐ संभूत्या अमृतमश्नुते ।।
संगठन से ही अमरत्व की प्राप्ति होती है।।

**मातृभूमि की धर्मध्वजा का अभिनंदन वंदन।
राष्ट्र देवता के चरणों में पावन शब्द नमन।।**

पाक्षिक
पाथेय कण
भाद्रपद कृ.१२, युगाब्द ५१२२, वि.२०७७
१६ अगस्त २०२०
वर्ष ३६ : अंक ०७

परम सुहृद पाठक–गण,
सप्रेम नमस्कार।

सभी कार्यकर्ताओं से आग्रह है कि पतों की पावतियाँ जल्द से जल्द कार्यालय पर भिजवाने का श्रम करें। जिससे सदस्यों को पाथेय कण प्राप्त हो सके। डाक विभाग की ओर से प्रेषण की असुविधा को देखते हुए अंक जिला केन्द्रों पर ट्रांसपोर्ट द्वारा प्रेषित किये जा रहे हैं। अंक न मिलने पर पाठक खंड(तहसील), जिले के कार्यकर्ताओं से संपर्क करें। १५ वर्षीय सदस्यों को अंक डाक द्वारा भेजे जा रहे हैं। नहीं मिले तो कृपया सूचित करें जिससे दुबारा अंक भेजा जा सके। आपका सहयोग निरंतर पाथेय कण को मिलता रहे,

इसी कामना के साथ
जय श्रीराम।

आपका
प्रबंध सम्पादक

सहयोग राशि

□□□ ₹ 1□0/- पन□□□ ₹1□00/-

प्रबंधकीय कार्यालय
'पाथेय भवन' 4, मालवीय संस्थानिक क्षेत्र,
अग्रसेन मार्ग, मालवीय नगर,
जयपुर–302017 (राज.)
सम्पर्क : 7976582011, 9414447123,
9929722111
Website: www.patheykan.in
E-mail: patheykan@gmail.com

भारतीय इतिहास की स्वर्णिम तारीख बनी ५ अगस्त

दो वर्षों के घटनाक्रम ने ५ अगस्त की तारीख को भारतीय इतिहास में स्वर्णिम अक्षरों में अंकित कर दिया है। जहाँ इस साल इस दिन अयोध्या में राम जन्मभूमि पर मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम के मन्दिर का भूमि पूजन हुआ वहीं पिछले वर्ष इसी तारीख को मोदी सरकार ने वह बिल पेश किया था जिससे भारतीय संविधान के अलगाव को संरक्षण देने वाले विभेदकारी अनुच्छेद ३७० और ३५ ए निष्प्रभावी हुए।

अयोध्या में प्रधानमंत्री मोदी द्वारा श्रीराम मंदिर के भूमि पूजन से ५०० वर्ष के लम्बे संघर्ष, लाखों राम सेवकों के बलिदान तथा करोड़ों हिन्दुओं की संकल्पपूर्ति हुई। इस दिन देश भर में उत्साह–उमंग का वातावरण था, घर–घर तथा मंदिर–मंदिर दीप जलाए गए, कहीं रामधुन तो कहीं हनुमान चालीसा का पाठ हुआ, प्रसाद बांटे गए, आपस में बधाइयां दी गई। देश ही नहीं विदेशों में भी अनेक स्थानों पर समारोह आयोजित कर भारतीयों ने श्रीराम भक्ति तथा राष्ट्र की सांस्कृतिक धरोहर से अपने को जोड़ा।

इस अवसर पर जन्मभूमि मुक्ति संघर्ष के बलिदानियों को शत–शत नमन, जिनके त्याग तपस्या तथा सर्वस्व अर्पण के कारण ही यह घड़ी आई। भारत सरकार, उत्तर प्रदेश सरकार, न्यायपालिका, रामलला पक्ष के वादी तथा वकीलगण के साथ ही जन्मभूमि मुक्ति आंदोलन को व्यापक आधार दे इसे जन आंदोलन बनाने वाले संगठन राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ, विश्व हिन्दू परिषद, बजरंग दल के नेतृत्व तथा सभी उत्साही कार्यकर्ताओं, लाखों कारसेवकों तथा समस्त हिंदू समाज का आभार। हम अति भाग्यशाली हैं कि इस बहुप्रतीक्षित स्वर्णिम समारोह के साक्षी बने। भूमि पूजन कार्यक्रम की भव्यता, जन समर्थन तथा ट्रस्ट की प्रतिबद्धता से विश्वास है कि मंदिर निर्माण का कार्य बिना देरी के पूरा होगा जो अपनी भव्यता, विशालता एवं व्यवस्थाओं के लिए अनुपम और श्रद्धालुओं को श्रीराम के गुणों को आत्मसात करने की प्रेरणा देता रहेगा।

पिछले वर्ष संसद में संविधान संशोधन द्वारा अनुच्छेद ३७० तथा ३५ए निष्प्रभावी करने के साथ ही जम्मू–कश्मीर राज्य का बंटवारा कर उसे जम्मू–कश्मीर और लद्धाख नामक दो केन्द्र शासित प्रदेशों में परिवर्तित कर दिया गया था। धारा ३७० को निष्प्रभावी बनाने का निर्णय न केवल साहसिक बल्कि ऐतिहासिक इसलिये भी है कि संविधान के जनक डॉ. अम्बेडकर स्वयं इस प्रावधान के खिलाफ थे तथा भाजपा (तत्कालीन जनसंघ) के संस्थापक डॉ. श्यामाप्रसाद मुखर्जी ने एक देश में दो विधान, दो निशान का विरोध करते हुए अपने प्राणों की आहुति तक दे दी।

पिछले एक वर्ष के कालखण्ड के लिए एक बात पूरे विश्वास के साथ कही जा सकती है कि अनुच्छेद ३७० के खत्म होने के तथाकथित दुष्परिणामों को लेकर मीडिया, बुद्धिजीवी–सेकुलर गठजोड़ तथा घाटी के राजनेताओं द्वारा जो →

**अकर्त्तव्येष्वसाध्वीव तृष्णा प्रेरयते जनम्।
तमेव सर्वपापेभ्यो लज्जा मातेव रक्षति।।**

तृष्णा मनुष्य को अधर्मी स्त्री के समान न करने योग्य कार्यों में प्रवृत्त कर देती है, परन्तु इसके विपरीत लज्जा मनुष्य को माता के समान सभी पाप कर्मों से बचाए रखती है।

(सुभाषितरत्न भाण्डागारम्/७६/२१)

आगामी पक्ष (१ -१५ सितम्बर २०२०) के विशेष अवसर

(भाद्रपद शुक्ल १४ से आश्विन कृष्ण १३)

जन्म दिवस

०१ सितम्बर (१९०९) – फादर कामिल बुल्के जन्मदिन
०३ सितम्बर (१९१४) – रा.स्व.संघ के वरिष्ठ प्रचारक यादवराव जोशी का जन्म दिवस
०४ सितम्बर (१८२५) – दादाभाई नौरोजी का जन्म दिवस
०५ सित. (१८८८) – डॉ. राधाकृष्ण जयंती (शिक्षक दिवस)
०५ सितम्बर (१९०६) – भीलों के देवता मामा बालेश्वर दयाल का जन्म दिवस
०७ सितम्बर (१८८७) – महामहोपाध्याय कविराज पं. गोपीनाथ का जन्म दिवस
०९ सितम्बर (१८८०) – अर्जुन लाल सेठी की जयन्ती
०९ सितम्बर (१८५०) – भारतेन्दु हरिशचन्द्र की जयन्ती
०९ सित. (१९१९) – राजस्थान में संघ कार्य के पुरोधा भारती पत्रिका के सम्पादक दादाभाई का जन्म दिवस
१५ सितम्बर (१८६१) – भारत रत्न डॉ. मोक्षगुंडम विश्वेश्वरैया का जन्म दिवस
१५ सित. (१८९२) – बाबा पृथ्वीसिंह आजाद की जयन्ती

बलिदान दिवस/पुण्यतिथि

०२ सितम्बर (१९३३) – अनाथ बंधु पंजा का बलिदान
०३ सितम्बर (१९३३) – मृगेन्द्र कुमार दत्त का बलिदान
०५ सित. (२००५) – परमवीर चक्र विजेता मेजर धनसिंह थापा की पुण्य तिथि
०७ सितम्बर (१५३९) – गुरु नानक देव का शरीर पंचतत्व में विलीन
०९ सितम्बर (१९१५) – चित्तप्रिय राय चौधरी का बलिदान
०९ सित. (२०१२) – श्वेत क्रांति के जनक वर्गीज कुरियन का देहान्त
१० सितम्बर (१९१५) – बाघा जतिन का बलिदान
१३ सितम्बर (१९२९) – यतीन्द्रनाथ दास का बलिदान
१४ सितम्बर (१८५८) – लाला जयदयाल का बलिदान
१५ सितम्बर (२००७) – डॉ. राकेश पोपली की पुण्यतिथि
१५ सित. (२०१२) – संघ के ५वें सरसंघचालक सुदर्शन जी की पुण्यतिथि

अन्य

०४ सितम्बर (१६६९) – काशी विश्वनाथ मंदिर ध्वंस
११ सितम्बर (१८९२) – स्वामी विवेकानंद का शिकागो धर्मसंसद में ऐतिहासिक उद्‌बोधन

→ हाय-तौबा मचाई जा रही थी, वह पूरी तरह से मिथ्या, असंगत, राष्ट्र विरोधी विशिष्ट विचारधारा से प्रभावित तथा निहित स्वार्थों की पूर्ति वाली साबित हुई।

गत एक वर्ष में हिंसा, आतंकी व पत्थरबाजी की घटनाओं में उल्लेखनीय कमी आई है। विशेष बात यह है कि कश्मीर केन्द्रित राजनीतिक दलों को भी यह अनुभूति हो चुकी है कि अब वहां की राजनीति कश्मीर की स्वायत्तता और आजादी जैसे मुद्दों से आगे निकल चुकी है। आज जमात-ए-इस्लामी और हुर्रियत कांफ्रेंस के साथ ही प्रदेश के मुख्य राजनीति दलों नेशनल कांफ्रेंस तथा पीडीपी के सामने आस्तित्व का संकट मंडरा रहा है।

सुरक्षा के मोर्चे पर बड़ी उपलब्धि है कि ३० वर्ष में पहली बार जम्मू-कश्मीर में आतंकियों की नई भर्ती के मुकाबले उनका खात्मा ज्यादा हो रहा है। सुरक्षा एजेन्सियों को पाकिस्तान से आतंकियों की घुसबैठ रोकने और हथियारों व पैसे की सप्लाई चेन तोड़ने में सफलता मिली है, अर्थात् आतंक का सपोर्ट सिस्टम ध्वस्त हो रहा है। आतंकियों के सहायक सहयोगी-समर्थक सिस्टम के खात्मे का परिणाम है कि जहाँ २०१९ पूरे वर्ष में १६० आतंकी मारे गये थे, वहीं इस साल के सात महीनों में ही ३० विदेशी तथा ३९ शीर्ष कमाण्डरों सहित १५० आतंकी मारे जा चुके हैं तथा घाटी में सक्रिय सभी आतंकी संगठन नेता विहीन हो गये हैं।

जम्मू-कश्मीर के विशेष कानूनों के प्रावधान हटाने तथा भारतीय कानूनों के प्रावधान लागू करने का काम तेजी से किया जा रहा है। इस बीच भारतीय कानूनों के प्रावधानों के तहत निवासी प्रमाण पत्र जारी करने से हजारों लोगों को सरकारी योजनाओं का लाभ मिलने लगा है। सरकार ने सेव तथा अखरोट की खरीद तथा विपणन की व्यवस्था कर किसानों को सम्बल प्रदान किया है। वर्षों (कुछ तो दशकों) से लटके प्रोजेक्टों पर तेज गति से काम हो रहा है, ५० नए कालेज खोले गए हैं जोजिला पास तथा अन्य स्थानों पर सुरंगें बन रही हैं ताकि बर्फीले क्षेत्र भी सड़क मार्ग से १२ महीने देश से जुड़े रह सकें, चिनाब पर पुल बन रहा है जो घाटी तक रेल सेवा पहुंचाएगा, तीन पन-बिजली योजनाओं पर तेजी से काम हो रहा है। कुल मिलाकर विकास की धारा बह चली है।

भारत सरकार के लिये सुरक्षा तंत्र की कसावट को जारी रखते हुए, घाटी में कश्मीरी पंडितों की सम्मानजनक और सुरक्षित वापसी, बड़े निवेश आकर्षित कर उद्योगों की स्थापना, रोजगार सृजन तथा पर्यटन उद्योग को पटरी पर लाने की आवश्यकता है ताकि परिवर्तन की बहार का लाभ आम कश्मीरी तक पहुंचे तथा वह भयमुक्त होकर नई व्यवस्था का भावनात्मक रूप से भी भागीदार बने। जय श्रीराम! ■

राष्ट्रीय पुनर्जागरण का प्रतीक है – श्रीराम मंदिर

४९२ वर्षों के लम्बे संघर्ष, अनेकानेक साधु–संत–रामभक्तों की बलिदानी साधना के बाद गत ५ अगस्त को प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा अयोध्या में श्रीराम मंदिर के पुनर्निर्माण का भूमि पूजन सनातन धर्म की परम्पराओं का पालन करते हुए वेदमंत्रों के साथ किया गया। भूमि पूजन के लिए देशभर से २००० पवित्र स्थानों की मिट्टी १०० से ज्यादा नदियों का जल तथा कई स्थानों से चांदी की ईंट सहित भेंट सामग्री अयोध्या पहुँची। १९८९ में दुनिया भर से पूजन के बाद आई २.७५ लाख राम नाम की ईंटों में से नौ ईंटों का पूजन कर इस अवसर पर काम में ली गई।

भूमि पूजन कार्यक्रम में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक मोहनराव भागवत, श्रीराममंदिर तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट के अध्यक्ष महंत नृत्य गोपालदास, प्रदेश की राज्यपाल आनंदीबेन पटेल, प्रदेश के युवा एवं कर्मठ मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के साथ मुख्य यजमान के रूप में उदयपुर के सलिल सिंहल (आंदोलन के पुरोधा अशोक सिंहल के भतीजे) शामिल हुए। कोरोना बचाव नियमों के अंतर्गत केवल १७५ निमन्त्रण भेजे गए जिनमें देश की विभिन्न संत परम्पराओं के १३५ संत–महंत–मठाधिपती तथा जन्मभूमि–ढांचा वाद के मुस्लिम पक्षकार इकबाल अंसारी, पद्मश्री मोहम्मद शरीफ तथा शिया वक्फ बोर्ड के अध्यक्ष सैयद वसीम रिजवी शामिल हैं।

भव्य तथा विशाल मंदिर

प्रस्तावित मंदिर ३६० फीट लंबा, २३५ फीट चौड़ा तथा १६१ फीट ऊँचा तीन तल का बनेगा। प्रत्येक तल पर ८ फीट व्यास वाले १०६ खंभे (कुल ३१८) लगेंगे। प्रत्येक खंभा यक्ष–यक्षणियों की १६ मूर्तियों से सुसज्जित होगा। मंदिर में पांच मंडप और एक मुख्य शिखर होगा। गर्भगृह और रंग मंडप के बीच गूढ़ मंडप होगा, दांए–बांए अलग–अलग कीर्तन व प्रार्थना मंडप होंगे।

श्रीराम मंदिर ७० एकड़ में बनेगा, जिसमें से तीन एकड़ में मंदिर तथा कॉरिडोर होगा। शेष भूमि पर म्यूजियम, सीता, लक्ष्मण, भरत तथा भगवान गणेश के मंदिर बनेंगे। मंदिर में सिंहद्वार, रंग मंडप, नृत्य मंडप, पूजा कक्ष तथा गर्भगृह के ऊपर पांच गुंबद बनेंगे।

मंच से संबोधन

मंचासीन विशिष्ट अतिथियों तथा उपस्थित रामभक्तों का स्वागत करते हुए मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने इस भूमि पूजन को ५ सदियों के संकल्पपूर्ति का दिन तथा नवयुग की शुरुआत बताया। उन्होंने कहा कि इस क्षण के इंतजार में अनेक पीढ़ियां चली गई।

लोकतांत्रिक तरीके तथा संविधान सम्मत तरीके से समस्याओं का समाधान हो सकता है, भारत ने दुनिया को इस बात का अहसास कराया। भगवान राम का भव्य–दिव्य मंदिर उनकी कीर्ति के अनुरूप भारत के यश कीर्ति को देश–दुनिया में आगे बढ़ाने का काम करेगा।

– योगी आदित्य नाथ, मुख्यमंत्री उ.प्र.

श्री मोहन भागवत ने अपने उद्‌बोधन में ३० वर्ष पूर्व लिये गए संकल्प की सिद्धि तथा सदियों की आस पूरी होने के आनंद का अवसर बताया। उन्होंने श्रीराम मुक्ति संघर्ष के पुरोधाओं तथा बलिदानियों को याद करते हुए कहा कि सभी रामभक्त, बलिदानी शरीर रूप से नहीं तो सूक्ष्म रूप में तथा शेष लोग जहां हैं वहां से इस कार्यक्रम के साक्षी हैं। उन्होंने यह भी कहा कि भारत को आत्मनिर्भर बनाने के लिए जिस आत्मविश्वास की आवश्यकता थी, उसका सगुण–साकार अधिष्ठान बनने का शुभारंभ आज हो रहा है; आज परम वैभव का शुभारंभ हो रहा है।

उन्होंने स्मरण कराया कि भारत द्वारा समस्त मानवजाति को जीवन जीने की शिक्षा देना शेष है, इसके लिए आवश्यक प्रभु श्रीराम के चरित्र का सारा पुरुषार्थ, वीरवृति हमारी रग–रग में है, उसको हमने खोया नहीं है। उन्होंने यह भी आह्‌वान किया कि मंदिर बनने के साथ–साथ हमें अपने मन की अयोध्या बनाना है अर्थात हमारे हृदय में भी श्रीराम बिराजें तभी हम सभी दोषों–शत्रुता से मुक्त तथा दुनिया की माया कैसी भी हो, उसमें सब प्रकार के व्यवहार करने में समर्थ बनेंगे। अपने हृदय से सभी प्रकार के भेदों को तिलांजलि देकर, केवल देशवासियों को ही नहीं, संपूर्ण जगत को अपनाने की क्षमता रखने वाले इस देश के व्यक्ति और समाज को गढ़ने का काम करना है।

संपूर्ण विश्व को सुख शांति देने वाला भारत हम खड़ा कर सकें, इसके लिए हमें अपने मन की अयोध्या बनाना है। राम मंदिर के पूर्ण होने से पहले हमारा मन मंदिर बनकर तैयार हो जाना चाहिए। हमारा हृदय श्रीराम का बसेरा हो।

– मोहन भागवत, सरसंघचालक,रा.स्वं.संघ

प्रधानमंत्री मोदी ने अपने संबोधन में कहा कि श्रीराम मंदिर हमारी संस्कृति का आधुनिक प्रतीक बनेगा, हमारी शाश्वत आस्था का, राष्ट्रीय भावना का और करोड़ों–करोड़ों लोगों की सामुहिक संकल्प शक्ति का प्रतीक बनेगा। उन्होंने राम, कृष्ण, छत्रपति शिवाजी, महाराजा सुहेलदेव तथा आजादी की लड़ाई का उदाहरण देते हुए कहा कि अब इतिहास दोहरा रहा है। श्रीराम मंदिर निर्माण में भी उन संघर्षों की तरह आमजन, दलित–गरीब–

पिछड़ा, आदिवासी सभी भागीदारी निभा रहे हैं। श्रीराम के व्यक्तित्व एवं गुण यथा वीरता, उदारता, सत्यनिष्ठा, निर्भीकता, धैर्य, दृढ़ता तथा उनकी दार्शनिक दृष्टि युगों-युगों तक हमें प्रेरित करते रहेंगे। श्रीराम समस्त प्रजा से एक समान प्रेम करते हैं, लेकिन गरीबों और दीन-दुःखियों पर उनकी विशेष कृपा रहती है। उन्होंने श्रीराम को सर्वव्यापक बताया और कहा कि भगवान बुद्ध राम से जुड़े हैं तो अयोध्या नगरी जैन आस्था का केन्द्र रही है। श्रीराम केवल भारतीयों के ही आराध्य नहीं है, अपितु विश्व के अनेक देशों नेपाल, श्रीलंका, इंडोनेशिया, कंबोडिया आदि के साथ ही सर्वाधिक मुस्लिम आबादी वाले देश इंडोनेशिया की आस्था में भी राम तथा रामकथा बसी हुई है।

प्रधानमंत्री ने यह भी कहा कि श्रीराम की तरह ही अयोध्या में बनने वाला यह भव्य श्रीराम मंदिर भारतीय संस्कृति की समृद्ध विरासत का द्योतक होगा तथा अनंतकाल तक पूरी मानवता को प्रेरणा देगा। इसलिए हमें यह सुनिश्चित करना है कि भगवान श्रीराम का संदेश, राममंदिर का संदेश, हमारी हजारों सालों की परंपरा का संदेश कैसे पूरे विश्व तक निरंतर पहुँचे, कैसे हमारे ज्ञान, हमारी जीवन-दृष्टि से विश्व परिचित हो, यह हमारी एवं भारत की भावी पीढ़ी की जिम्मेदारी है। प्रभु राम की शिक्षा है- कोई दुःखी न हो, कोई गरीब न हो, नर-नारी समान रूप से सुखी हों, किसान-पशुपालक हमेशा खुश रहें। प्रभु श्रीराम ने हमें कर्तव्य पालन की सीख देने के साथ ही कर्तव्यों को कैसे निभाएं, इसकी सीख दी है।

राम मंदिर निर्माण की प्रक्रिया राष्ट्र को जोड़ने का उपक्रम है। यह महोत्सव है नर को नारायण से जोड़ने का, लोक को आस्था से जोड़ने का, वर्तमान को अतीत से जोड़ने का।

– नरेन्द्र मोदी, प्रधानमंत्री

हमारी संस्कृति के आधार और भारत की मर्यादा हैं राम। भारत की आस्था में राम हैं, आदर्शों में राम हैं, दिव्यता में राम हैं, दर्शन में राम हैं। हजारों साल पहले वाल्मीकि रामायण में, तुलसी की रामायण में, नानक कबीर के राम हैं। तुलसी के राम सगुण, नानक कबीर के राम निर्गुण राम हैं। गुरु गोविन्द सिंह जी ने स्वयं गोविन्द रामायण लिखी। अलग-अलग जगहों पर राम भिन्न-भिन्न रूपों में मिलेंगे, पर राम सब जगह हैं, राम सबके हैं।

– नरेन्द्र मोदी, प्रधानमंत्री

हमें आपसी प्रेम और भाईचारे के जोड़ से राममंदिर की इन शिलाओं को जोड़ना है। हमें सबके साथ से, सबके विश्वास से सबका विकास करना है। अपने परिश्रम अपनी संकल्पशक्ति से एक आत्मविश्वासी और आत्मनिर्भर भारत का निर्माण करना है।

नव्य अयोध्या

प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि मंदिर बनने के बाद अयोध्या की भव्यता ही नहीं बढ़ेगी, इस क्षेत्र का पूरा अर्थतन्त्र भी बदल जाएगा। जब पूरी दुनिया के लोग प्रभु राम तथा माता जानकी के दर्शन करने आएंगे, यहां हर क्षेत्र में नए अवसर बनेंगे तथा अवसर बढ़ेंगे।

प्राप्त जानकारी के अनुसार नव्य अयोध्या ४०० हेक्टेयर में बसाने की योजना है। यह नगरी अयोध्या से १० किमी दूर शाहनेवाजपुर ग्राम के निकट बसेगी और अयोध्या का आधुनिक चेहरा होगी। इसके ५०० एकड़ में हाईटेक टाउनशिप बसेगी जिसमें पांच सितारा होटल, रिवर-साइड रिजार्ट, मल्टी स्टोरी बिल्डिंग, आवासीय और व्यावसायिक प्लाट, बेहतरीन सड़कें होंगी; ड्रेनेज सिस्टम तथा बिजली के तार अन्डरग्राउंड होंगे। यहां अन्तर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा बनेगा। लखनऊ से गोरखपुर तक बनने वाले छह लेन सड़क से अयोध्या को जोड़ने के लिए सहादतगंज से अयोध्या तक चार लेन सड़क बनाई जाएगी। 'कोदंड राम' की २५१ फीट ऊँची प्रतिमा माझा बरहटा में ८३ हेक्टेयर भूमि में लगाई जाएगी। लगने के बाद यह प्रतिमा विश्व की सबसे ऊँची प्रतिमा होगी।

भूमि पूजन कार्यक्रम से पहले प्रधानमंत्री ने हनुमानगढ़ी जाकर हनुमानजी की आराधना कर शुभ कार्य के लिए आशीर्वाद लिया। उन्होंने रामलला के अस्थाई मंदिर जाकर साष्टांग प्रणाम कर दर्शन पूजन किया। स्वतन्त्र भारत में छद्म धर्मनिरपेक्षता की राजनीति के चलते श्री नरेन्द्र मोदी अयोध्या में रामलला के दर्शन करने वाले पहले प्रधानमंत्री हैं।

राम मंदिर को लेकर देश के राजनीतिक परिदृश्य में भी आमूल-चूक परिवर्तन आ गया है। भगवान राम के अस्तित्व को नकारने वाले, जन्मस्थान मुक्ति का विरोध करने वाले, रामभक्तों (कारसेवकों) पर गोली चलवाने वाले तथा जातिवादी राजनीति करने वाले सभी नेता भूमि पूजन के अवसर पर भगवा ओढ़ अपने घरों-मंदिरों में रामायण बिठा रहे हैं, लगभग सभी दलों के दिग्गज नेताओं ने मंदिर निर्माण का स्वागत करते हुए ट्वीट किए हैं। आशा करनी चाहिए कि ये नेता पुनः हिन्दुओं की सहिष्णुता को उसकी कमजोरी समझने, हिंदुओं को जात-पांत, अगड़ा-पिछड़ा में बांटने अथवा अल्पसंख्यक तुष्टीकरण की राजनीति नहीं करेंगे।

अयोध्या में बनने वाला श्रीराम मंदिर निश्चित रूप से भारत की सांस्कृति विरासत, राष्ट्रीयता के प्रतीक के रूप में आने वाली पीढ़ियों को सनातन धर्म द्वारा निर्धारित नैतिकता तथा जीवनमूल्यों को अपनाने की प्रेरणा देता रहेगा।

जय श्री राम। ■

दैनिक जीवन में श्रीमद्भगवद्गीता का प्रयोग

श्रीमद्भगवद्गीता जीवन की समस्याओं से पार निकलने और प्रमादग्रस्त जनों को जगाने का महामंत्र है। इस बार ईश्वर की प्रियता एवं भक्ति प्राप्त करने के लिये गीता के कुछ अनुभूत प्रयोग दिये जा रहे हैं :-

अद्वेष्टा सर्वभूतानां मैत्रः करुण एव च।
निर्ममो निरहङ्कारः समदुःखसुखः क्षमी।।
सन्तुष्टः सततं योगी यतात्मा दृढ़निश्चयः।
मय्यर्पितमनोबुद्धिर्यो मद्भक्तः स मे प्रियः।।

(गीता १२।१३-१४)

ईर्ष्याविहीन, सभी जीवों के प्रति मैत्रीभाव रखने वाला, स्वार्थरहित, ममता और अहंकार से मुक्त, सुख-दुःख की प्राप्ति में समभाव रखने वाला, सहिष्णु, निरन्तर सन्तुष्ट, जो मन-इन्द्रिय सहित शरीर को वश में किये हुए है और मुझमें दृढ़ निश्चय वाला है- वह मुझमें अर्पण किये हुए मन- बुद्धिवाला मेरा भक्त मुझको प्रिय है।

यत्करोषि यदश्नासि यज्जुहोषि ददासि यत्।
यत्तपस्यसि कौन्तेय तत्कुरुष्व मदर्पणम्।।

(गीता ९/२७)

हे कुन्तीपुत्र! तुम जो कुछ करते हो, जो कुछ खाते हो, हवन करते हो, दान देते हो या तप करते हो सब कुछ मुझे अर्पित करते हुए करो।

मन्मना भव मद्भक्तो मद्याजी मां नमस्कुरु।
मामेवैष्यसि युक्त्वैवमात्मानं मत्परायणः।।

गीता (९/३४)

अपने मन को नित्य मेरे चिन्तन में लगाओ, मेरे भक्त बनो, मेरी पूजा करो और मुझे प्रणाम करो। इस प्रकार जीवात्मा को मुझमें तल्लीन करने पर तुम निश्चय ही मुझको प्राप्त होओगे।

सर्वधर्मान्परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज।
अहं त्वां सर्वपापेभ्यो मोक्षयिष्यामि मा शुचः।।

(गीता १८/६६)

सब प्रकार के धर्मों अर्थात् कर्तव्य कर्मों का मुझमें परित्याग कर तू मेरी शरण में आ जा। मैं समस्त पापों से तेरा उद्धार कर दूँगा, तू शोक मत कर।

*- **प्रो.वी.के.अरोड़ा**, एम.ए., पीएचडी*

जन्म शताब्दी वर्ष (१९२०-२०२०) पर विशेष

एक काली कष्टकारी यात्रा

श्री दत्तोपंत जी ठेंगड़ी जन्म शताब्दी वर्ष के अन्तर्गत दिये जा रहे प्रसंगों की शृंखला में इस बार प्रस्तुत है आर.वेणुगोपाल, पूर्व कार्याध्यक्ष, भारतीय मजदूर संघ, एर्नाकुलम (केरल) का अनुभव कथन -

केरल के पालघाट में संघ शिक्षा वर्ग चल रहा था। श्री ठेंगड़ी जी को नागपुर से आना था और दो दिन वर्ग में रुक कर वहाँ से सीधे दिल्ली जाना था। किन्तु उनकी ट्रेन २४ घंटे लेट थी।

जब वे कोच से बाहर आए तो हम उन्हें बड़ी कठिनाई से पहिचान सके। उनका चेहरा, हाथ-पैर, कपड़े सब काले स्याह हो रहे थे केवल उनकी मधुर मुस्कान चेहरे पर स्वाभाविक रूप से चमक रही थी।

हमने पूछा यह क्या हुआ, कैसे हुआ? उन्होंने कहा जिस डिब्बे में मैं यात्रा कर रहा था उस में पंखा बंद था। गर्मी की रात, सो मैंने खिड़की के शीशे ऊपर चढ़ा दिये। फलस्वरूप रात भर इंजन से कोयले के धुँए की राख सिर-मुँह, कपड़ों पर पड़ती रही। गाड़ी एक दिन लेट चल रही थी और आज प्रातः मद्रास पहुँचने पर तुरन्त पालघाट की गाड़ी में सवार हो इस हालत में यहाँ पहुँच गया।

संघ शिविर में पहुँचने पर तीन दिन की कष्टकारी काली यात्रा की थकान को भलूकर वे त्वरित गति से नहा-धोकर प्रातःकालीन १० बजे वाले बौद्धिक (भाषण) के लिए तैयार हो गये। बौद्धिक का विषय था 'साम्यवाद और इसकी न्यूनताएँ', एक ऐसा विषय जिसके बारे में केरल के स्वयंसेवक बड़ी उत्सुकता से जानना चाहते थे। वह एक ऐसा समय था जब साम्यवाद अपने शिखर पर था। श्री ठेंगड़ी जी उक्त विषय पर डेढ़ घंटा धाराप्रवाह बोले और स्वयंसेवक दत्तचित्त होकर सुनते रहे।

श्री ठेंगड़ी जी ने दोपहर का भोजन लिया। मुश्किल से एक घंटा विश्राम किया और अपराह्न तीन बजे अपने अगले बौद्धिक के लिए वह फिर तैयार मिले।

उनका यह दूसरा बौद्धिक लगभग दो घंटे चला। उनींदी आँखें बतला रही थीं कि उन की नींद पूरी नहीं हुई है किन्तु उनका युक्तियुक्त तर्कसंगत बौद्धिक ओजस्वी वाणी द्वारा प्रवाहित हो रहा था। बौद्धिक उपरान्त अनौपचारिक रूप से वे कार्यकताओं से बातचीत करते रहे और सायं गाड़ी के ठीक समय पर वे रेलवे स्टेशन पर दिल्ली प्रस्थान के लिए आगे तीन रात्रि की लम्बी यात्रा के लिए तैयार खड़े थे। ■

अजेय यौद्धा पेशवा बाजीराव का

पालखेड़ा का ऐतिहासिक संग्राम

भारत के इतिहास में पेशवा बाजीराव अकेला ऐसा योद्धा है जिसने ४१ लड़ाईयाँ लड़ीं और सभी में विजयश्री का वरण किया। पेशवा बाजीराव का जन्म १८ अगस्त १७०० को भट्ट (चित्तपावन ब्राह्मण) परिवार में हुआ। उनके पिता बालाजी विश्वनाथ तथा माता का नाम राधाबाई था। उनके पिता छत्रपति शाहू जी के प्रथम पेशवा थे। बाजीराव अपने पिता के साथ हमेशा सैन्य अभियानों पर जाया करते थे।

पेशवा बाजीराव जिन्हें बाजीराव प्रथम, बाजीराव बल्लाल भट्ट तथा थोरल बाजीराव भी कहा जाता है, मराठा साम्राज्य के महानतम पेशवा थे। १७२० में अपने पिता की मृत्यु के बाद मात्र २० वर्ष की उम्र में उन्होंने पेशवा पद सम्हाला और मृत्यु पर्यन्त इस पद की शोभा बढ़ाते रहे। ६ फुट लम्बे, बलिष्ठ, तेजस्वी बाजीराव को इतिहासकारों ने सर्वश्रेष्ठ घुड़सवार, तलवार बाजी एवं भाला–युद्ध में निपुण योद्धा तथा सर्वोत्तम रणनीतिकार और नेता बताया है। निजाम हैदराबाद, मोहम्मद बंगश से लेकर मुगलों और पुर्तगालियों को कई कई बार हार का मजा चखाने वाले बाजीराव के समय में दक्षिण भारत, महाराष्ट्र , गुजरात, मालवा, बुंदेलखण्ड सहित तीन चौथाई भारत पर मराठों का कब्जा था तथा मुगल सल्तनत का शासन दिल्ली तक सिमट गया था। उनकी ऐतिहासिक जीतों में मालवा (१७२३), शकरखेड़ा (१७२४), औरंगाबाद(१७२४), दिल्ली तथा निजाम भोपाल (१७३७) तथा पालखेड़ा (१७२८) उल्लेखनीय हैं।

द्वितीय विश्वयुद्ध के प्रसिद्ध सेनानायक फील्ड मार्शल मांटगुमरी ने युद्धशास्त्र पर आधारित अपनी पुस्तक 'ए कन्साइज हिस्ट्री आफ वारफेयर' में विश्व के सात प्रमुख युद्धों की चर्चा की है। इसमें एक युद्ध पालखेड़ (कर्नाटक) का है, जिसमें बाजीराव पेशवा (प्रथम) ने संख्या व शक्ति में अपने से लगभग ३ गुनी निजाम हैदराबाद की सेना को हराया था। उन्होंने बाजीराव की बिजली की गति से तेज आक्रमण शैली की जमकर तारीफ की है और लिखा है कि बाजीराव कभी हारा नहीं। आज यह पुस्तक ब्रिटेन में डिफेंस स्टडीज के कोर्स में पढ़ाई जाती है।

पालखेड़ का युद्ध

बाजीराव के पिता बालाजी विश्वनाथ के पेशवाकाल में मुगलों के काफी क्षेत्र और सम्पदा मराठों ने जीती थी। १७२४ में दिल्ली की मुगल सल्तनत से स्वयं को स्वतंत्र घोषित कर आसफ जाह हैदराबाद का पहला निजाम (निजाम उल मुल्क) बना। उसने मराठों की शक्ति कम करने के लिये छत्रपति शाहू जी के स्थान पर कोल्हापुर के मराठा सरदार संभा जी का समर्थन किया तथा दक्षिणी सूबों से मराठों को मिलने वाली चौथ बंद कर दी। जब बाजीराव कर्नाटक अभियान से लौट रहे थे, निजाम की सेना ने उनका पीछा किया। बाद में शाहू जी के मराठा क्षेत्रों उदयपुर, अवसरी, पबल, खेड़, नारायणगढ़ आदि को रौंद पूना पर कब्जा कर लिया। अपनी बड़ी सेना के बूते निजाम को लगा कि लौट रहे बाजीराव को बीच रास्ते में बड़ी आसानी से हरा देगा।

औरंगाबाद के पश्चिम तथा वैजापुर के पूर्व में स्थित पालखेड़ गांव में २५ फरवरी १७२८ को यह युद्ध हुआ था। पालखेड़ चारों ओर से छोटी छोटी पहाड़ियों से घिरा है। निजाम के पास विशाल तोपखाना था, पर बाजीराव के पास एक दिन में ७५ किमी तक चलकर धावा बोलने वाली घुड़सवारों की विश्वस्त टोली थी।

जिस प्रकार शिकारी चतुराई से शिकार को चारों ओर से घेरकर अपने कब्जे में लेता है, उसी प्रकार बाजीराव ने निजाम की सैन्य शक्ति तथा पालखेड़ की भौगोलिक स्थिति का गहन अध्ययन किया। जब उन्हें निजाम की सेना के प्रस्थान का समाचार मिला, तब वे बेटावद (धूला जिला) में थे। उन्होंने कासाबारी की पहाड़ियों में डेरा डाल दिया।

इसके बाद उन्होंने पहले से रणनीति बनाकर धैयपूर्वक प्रतीक्षा की और निजाम की सेना को दलदली नदी के किनारे आने को मजबूर कर दिया। निजाम के पास तोपों का विशाल बेड़ा था, पर यह घाटी संकड़ी होने के कारण तोपें वहां पहुँच ही नहीं सकी। परिणाम यह हुआ कि सेना घाटी में आ गई, बाजीराव ने उसे चारों ओर से घेरकर उसकी रसद–पानी बंद कर दी। सैनिक ही नहीं उनके घोड़े भी भोजन और पानी के अभाव में मरने लगे।

यह हालत देखकर निजाम घबरा गया और उसे घुटनों के बल झुककर संधि करने पर मजबूर होना पड़ा। ६ मार्च १७२८ को यह संधि 'शेवगांव की संधि' के नाम से प्रसिद्ध है। इस संधि से पूर्व बाजीराव ने जमानत के तौर पर निजाम के दो प्रमुख कर्मचारियों को अपने पास गिरवी रखा।

संधि के अनुसार अक्कलकोट, खेड़, तलेगांव, बारामती, इन्द्रापुर, नारायणगढ़ तथा पूना आदि स्थान जो किसी समय मराठा साम्राज्य में थे, वे सब फिर से मराठों के अधिकार में आ गये। निजाम ने शाहू जी को मराठा सम्राट के रूप में स्वीकार किया तथा दक्खिन के सरदेशमुखी की सनद व स्वराज्य की सनद भी मराठों को सोंप दी।

इस विजय ने मराठों की शक्ति का डंका बजा दिया। मुगल तथा पुर्तगालियों के मन में मराठों का डर बैठ गया। इस विजय की सबसे अनूठी विशेषता थी, बाजीराव की रणनीति तथा सैन्य योजकता, क्योंकि पालखेड़ के मैदान में बिना युद्ध किये, बाजीराव ने निजाम सेना को हरा दिया था। ■

स्वागतम् रफाल

सबसे ताकतवर लड़ाकू विमानों में गिने जाने वाले रफाल विमानों की पहली खेप के ५ विमान गत २९ जुलाई को अंबाला एयरबेस पहुँच गये जहाँ वायुसेना प्रमुख आर.के.एस. भदौरिया की उपस्थिति में परम्परागत वाटर सेल्यूट के साथ उनका स्वागत किया गया। देश में रफाल विमानों के पहुँचने पर प्रधानमंत्री मोदी ने संस्कृत में ट्वीट कर कहा,

''राष्ट्र रक्षासमं पुण्यं, राष्ट्र रक्षासमं व्रतम्, राष्ट्र रक्षासमं यज्ञो, दृष्टो नैव च ...नैव च ... नभः स्पृशं दीप्तम्... स्वागतम्!'' इस श्लोक का अर्थ है– राष्ट्र रक्षा से बढ़कर न कोई पुण्य है, न कोई व्रत, न ही कोई यज्ञ है, आकाश के दीप्तिमान... स्वागत है। रक्षामंत्री तथा गृहमंत्री ने भी विमानों के भारत आगमन का स्वागत करते हुए ट्वीट किए।

खरीद सौदा

भारत ने २०१६ में फ्रांस से हथियारों से सुसज्जित ३६ रफाल विमान खरीदने का सौदा लगभग ५८ हजार करोड़ (भारत के लिए १३ परिवर्धनों की लागत सहित) में किया था। यह सौदा भारत सरकार तथा फ्रांस सरकार के बीच, बिना किसी बिचौलिए के किया गया था।

सभी विमानों के २०२१ तक आ जाने पर आधे विमान अंबाला तथा आधे विमान पं. बंगाल के हासीमारा एयरबेस पर रखे जाएंगे। अब से लगभग २३ साल पहले रूस से लड़ाकू विमान सुखोई खरीदे गये थे।

विशेषताओं में अद्वितीय

बहुउद्देशीय (फाइटर, इंटरसेप्शन, ग्राउंड अटैक, एंटी शिप आदि) लड़ाकू विमान रफाल की कुछ विशेषताएँ जो इसे दुनिया का सबसे शक्तिशाली लड़ाकू विमान बनाती हैं, निम्न हैं :

राफेल दो इंजन वाला, डेल्टा विंग (पंखों के साथ तिकोने आकार का) तथा दुश्मन के रडार को चकमा देने वाला चौथी पीढ़ी का लड़ाकू विमान है। यह न केवल फुर्तीला है, बल्कि परमाणु हमला करने में सक्षम है। इसके साथ ही इसमें आधुनिकतम कम्प्यूटर सिस्टम भी है जो पायलट को इसे नियंत्रण तथा निर्देश देने में सहायक है।

इसमें उन्नत श्रेणी का रडार, इलेक्ट्रॉनिक संचार सिस्टम, दुश्मन के हमले में स्वरक्षा वाले उपकरण लगे हुए हैं, जो विमान की कीमत का लगभग ३० प्रतिशत है। इस विमान में एक अत्याधुनिक वैमानिक सुइट है, जो काफी नीचे तक के लक्ष्य साधने में इसे सक्षम बनाता है। रफाल स्वयं एक विशिष्ट प्रकार रडार (सिंथेटिक अपरचर रडार) भी है, जो आसानी से जाम नहीं किया जा सकता। इसके अलावा किसी भी खतरे की आशंका की स्थिति में इसमें लगा रडार वार्निंग रिसीवर, लेजर वार्निंग और मिसाइल एप्रोच वार्निंग सिस्टम सतर्क हो जाता है और रडार को जाम होने से बचाता है। रफाल का रडार सिस्टम इतना ताकतवर है कि २०० कि.मी से अधिक के दायरे में आने वाले किसी भी एयरक्राफ्ट या मिसाइल का पता लगा सकता है।

रफाल की प्रमुख विशेषताएं

इंजन	– २ (एम८८–२)
कुल भार क्षमता	– २४५००किग्रा
आयुध भार क्षमता	–१००००किग्रा
उड़ान अधिकतम समय	–१० घंटे
न्यूनतम गति	– २८ किमी/घंटा
अधिकतम गति	– २१३० किमी/घंटा
ऊर्ध्वाकार गति	– ६०००० फीट/मि.
काम्बेट रेडियस	– ३७०० किमी
आयुध सक्षमता	– हां
हेमर मिसाइल	– हां (रेंज ७०किमी)
मीटियर मिसइल	– हां(रेंज १५० किमी.)
स्काल्प मिसाइल	–हां (रेंज ३०० किमी)
हवा में ईधन भरना	– हां

रफाल विमान का शक्तिशाली एम–८८–२ आगमेंटेड इंजन इसे फुर्तीला, ज्यादा गोला बारूद तथा मिसाइल ले जाने वाला सर्वश्रेष्ठ विमान बनाता है। एक बार में यह विमान २४५०० किलो वजन के साथ उड़ सकता है। रफाल हवा में सिर्फ २८ किमी/ प्रतिघंटा की अति धीमी रफ्तार के साथ–साथ २१३० किमी/घंटा की तेज रफ्तार से उड़ सकता है। यह विमान एक मिनट में ६०,००० फीट की ऊँचाई तक पहुँच सकता है। एक बार ईंधन भरने पर १० घंटे उड़ान भर सकता है। इस विमान का कोम्बेट रेडियस ३७०० किमी है अर्थात यह अपनी उड़ान वाली जगह से ३७०० किमी दूर हमला कर वापस लौट सकता है। आवश्यकता पड़ने पर इसमें हवा में पुनः ईधन भरने (री फ्यूलिंग इन एयर) की क्षमता भी है।

भारत के लिए परिवर्धन

रफाल की विजिबिलीटी (देखने की क्षमता) ३६० डिग्री है, जिसकी मदद से यह ऊपर–नीचे के अलावा चारों तरफ निगरानी कर सकता है। इजराइल के हेलमेट माउंटेड डिस्प्ले, लो बेंड जैमर, फ्लाइट की १० घंटे डाटा रिकार्डिंग, इन्फ्रारेड सर्च, ट्रेकिंग सिस्टम और अति ठण्डे मौसम में (जीरो डिग्री से नीचे तापमान पर भी) इंजन स्टार्ट करने जैसे १३ परिवर्धन इन विमानों में भारत के लिए अलग से किये गये है।

आयुधों की विविधता

रफाल में आधुनिकतम हथियार भी हैं जैसे १२५ राउंड के साथ ३० मिलीमीटर की तोप जैसी बन्दूक। रफाल को और अधिक शक्तिशाली बनाने के लिए इसमें हैमर मिसाइल लगवाई जा रही है। हेमर मिसाइल आसमान *...शेष पृष्ठ १३ पर*

हंसमुख व मिलनसार भंवरसिंह शेखावत

श्री भंवरसिंह शेखावत का जन्म १८ जनवरी, १९२३ को ग्राम चिराणा (जिला- झुंझुनू, राजस्थान) में हुआ था। वे १९४४ में स्वयंसेवक और १९४६ में प्रचारक बने। उस समय वे अपने माता-पिता की अकेली संतान थे। उनके पिताजी पहले जयपुर राज्य की सेना में थे। इसके बाद वे सरकारी सेवा में आ गये।

भंवरसिंह जी १९४६ से १९५९ तक राजस्थान में कई स्थानों पर जिला प्रचारक रहे। इस बीच संघ पर प्रतिबन्ध लगने से सभी कार्यकर्ताओं को अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। प्रतिबन्ध समाप्ति के बाद भी उन समस्याओं का अंत नहीं हुआ; पर भंवरसिंह जी धैयपूर्वक कार्यक्षेत्र में डटे रहे।

वे १९५९ से ७६ तक बीकानेर, अजमेर तथा एक बार फिर बीकानेर विभाग प्रचारक रहे। १९७६ से १९८३ तक उन पर प्रांत व्यवस्था प्रमुख का दायित्व रहा।

भंवरसिंह शेखावत

व्यवस्था प्रमुख रहते हुए उनकी देखरेख में जयपुर में प्रांत कार्यालय 'भारती भवन' का निर्माण हुआ। जब कन्याकुमारी में श्री एकनाथ जी के नेतृत्व में विवेकानंद शिला स्मारक का निर्माण हुआ, तो राजस्थान में भंवरसिंह जी उस अभियान के संगठन मंत्री रहे। उनके नेतृत्व में पूरे प्रान्त से साढ़े छह लाख रुपये एकत्र हुए, जिसमें एक लाख से अधिक का योगदान राजस्थान सरकार का था। इसके लिये बनी समिति में उन्होंने अनेक प्रभावी व प्रतिष्ठित लोगों को जोड़ा। राजस्थान विश्वविद्यालय के उपकुलपति डॉ. मथुराप्रसाद शर्मा तथा शिक्षा मंत्री श्री शिवचरण लाल माथुर को उन्होंने समिति का अध्यक्ष बनाया।

राजस्थान में शेखावटी के व्यापारियों ने देश भर में अपनी कारोबार क्षमता की धाक जमाई है। बिड़ला, डालमिया, सिंघानिया आदि यहीं के मूल निवासी हैं। जब ये सेठ अपने गांव आते थे, तो भंवरसिंह जी उन्हें अपने गांव का विकास करने तथा उनकी आर्थिक सामर्थ्य को देशहित में मोड़ने का प्रयास करते थे। वे उन सेठों की सम्पत्ति की देखभाल करने वालों से भी सम्पर्क रखते थे।

उन दिनों सेठ बिड़ला द्वारा पिलानी में स्थापित तकनीकी कॉलेज (बिट्स) में पूरे देश से छात्र आते थे। भंवरसिंह जी ने वहां शाखा चलाकर उनमें से कई को प्रचारक बनाया, जो राजस्थान के साथ ही अन्य प्रान्तों में भी गये। उनके समय के कई कार्यकर्ता आगे चलकर सार्वजनिक क्षेत्र में बड़े प्रसिद्ध हुए।

शेखावटी क्षेत्र में नाथ सम्प्रदाय के संतों का बड़ा प्रभाव है। इनसे वे नियमित सम्पर्क रखते थे। राजस्थान के अनेक बड़े राजपूत सरदारों को भी उन्होंने संघ से जोड़ा। खाचरियावास के ठाकुर सुरेन्द्र सिंह आगे चलकर प्रांत संघचालक बने। भूस्वामी आंदोलन के नेताओं को भी उन्होंने राष्ट्रीय दृष्टि दी। उनमें से एक ठाकुर मदनसिंह दाता राजस्थान जनसंघ के अध्यक्ष बने।

श्री भंवरसिंह जी १९८४ से ८६ तक उदयपुर संभाग प्रचारक रहे; पर इस बीच वे आंत के कैंसर से पीड़ित हो गये। जानकारी मिलने पर उन्होंने हंसते हुए इस रोग का सामना किया। चिकित्सा के सभी प्रयासों के बावजूद २१ अगस्त, १९८६ को उन्होंने सदा के लिए सबसे विदा ले ली। ■

जन्म दिवस पर शत-शत नमन

हिन्दी निबन्धकार, आलोचक और उपन्यासकार आचार्य
हजारी प्रसाद द्विवेदी
१९ अगस्त

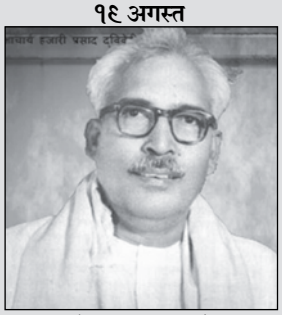

(१९०७-१९७९)

महान संत एवं समाज सुधारक
नारायण गुरु
२० अगस्त

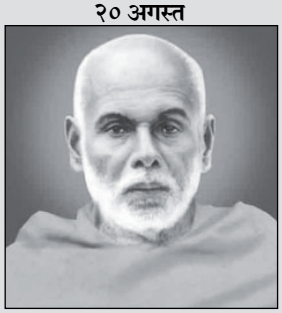

(१८५४-१९२८)

रा.स्व.संघ के प्रारम्भ के प्रचारक एवं अ.भा.बौद्धिक प्रमुख
बाबा साहब आप्टे
२८ अगस्त

(१९०३-१९७२)

हॉकी के जादूगर एवं भारतीय हॉकी टीम के कप्तान
मेजर ध्यानचन्द
२९ अगस्त

(१९०५-१९७९)

दक्षिण का सेनापति यादवराव जोशी

ठिगने कद के, साधारण से दिखने वाले, घुन के पक्के एक मराठी भाषी युवक ने अपने जीवन के ५० वर्ष दक्षिण भारत को दिए और इतिहास रच दिया। कर्नाटक में प्रचारक बनकर आने से पहले यादवराव जोशी ने शायद ही कभी कन्नड़ सुनी हो, पर पूरा जीवन कन्नड़ भाषी लोगों के दिलों पर राज किया। दक्षिण के सेनापति कहे जाने वाले जोशी जी ने तमिलनाडु, केरल, कर्नाटक व आंध्र प्रदेश में संघकार्य की नींव रखी व सेवा को संघ के काम में शामिल किया।

श्री यादव कृष्ण जोशी का जन्म अनन्त चतुर्दशी (३ सितम्बर, १९१४) को नागपुर के एक वेदपाठी परिवार में हुआ। वे अपने माता–पिता के एकमात्र पुत्र थे। उनके पिता श्री कृष्ण गोविन्द जोशी एक साधारण पुजारी थे। अतः यादवराव को बालपन से ही संघर्ष एवं अभावों भरा जीवन बिताने की आदत हो गयी।

यादवराव के डॉक्टर हेडगेवार से बहुत निकट सम्बन्ध थे। वे डॉक्टर जी के घर पर ही रहते थे। एक बार डॉक्टर जी बहुत उदास मन से मोहिते के बाड़े की शाखा पर आये। उन्होंने सबको एकत्र कर कहा कि ब्रिटिश शासन ने वीर सावरकर की नजरबन्दी २ वर्ष के लिए बढ़ा दी है। अतः सब लोग तुरन्त प्रार्थना कर शांत रहते हुए घर जाएंगे। इस घटना का यादवराव के मन पर गहरा प्रभाव पड़ा। वे पूरी तरह डॉक्टर जी के भक्त बन गये।

यादवराव एक श्रेष्ठ शास्त्रीय गायक थे। उन्हें संगीत का 'बाल भास्कर' कहा जाता था। उनके संगीत गुरु श्री शंकरराव प्रवर्तक उन्हें प्यार से 'बुटली भट्ट' (छोटू पंडित) कहते थे। डॉ. हेडगेवार की उनसे पहली भेंट २० जनवरी, १९२७ को एक संगीत कार्यक्रम में ही हुई थी।

वहां आये संगीत सम्राट सवाई गंधर्व ने उनकी बहुत प्रशंसा की थी; पर फिर यादवराव ने संघ कार्य को ही जीवन का संगीत बना लिया। १९४० से संघ में संस्कृत प्रार्थना प्रचलित हुई। इसका पहला गायन संघ शिक्षा वर्ग में यादवराव ने ही किया था। संघ के अनेक गीतों के स्वर भी उन्होंने बनाये थे।

एम.ए. तथा कानून की परीक्षा उत्तीर्ण

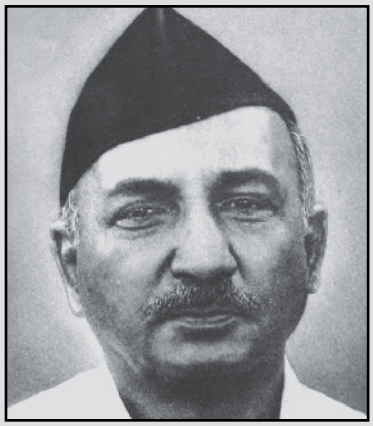

यादवराव जोशी

कर यादवराव को प्रचारक के नाते झांसी भेजा गया। वहां वे तीन–चार मास ही रहे कि डॉक्टर जी का स्वास्थ्य बहुत बिगड़ गया। अतः उन्हें डॉक्टर जी की देखभाल के लिये नागपुर बुला लिया गया।

१९४१ में उन्हें कर्नाटक प्रांत प्रचारक बनाया गया। इसके बाद वे दक्षिण क्षेत्र प्रचारक, अ०भा० बौद्धिक प्रमुख, प्रचार प्रमुख, सेवा प्रमुख तथा १९७७ से ८४ तक सह सरकार्यवाह रहे।

उन्होंने सबकी सेवा के लिए हाथ बढ़ाए और लोग उनके पीछे चलते गए। यादवराव जी की प्रेरणा से शुरु हुई ''राष्ट्रोत्थान परिषद'' एक ओर जरूरतमंद मरीजों के लिए बेंगलूरू का सबसे बड़ा ब्लड बैंक चलाती है तो दूसरी ओर झुग्गियों के बच्चों के लिए निःशुल्क कोचिंग सेंटर चलाती है। केरल में छोटे छोटे बच्चों को बाल गोकुलम के जरिए भारत की संस्कृति से जोड़ने के प्रेरक भी यादवराव जी ही थे।

दक्षिण में पुस्तक प्रकाशन, सेवा, संस्कृत प्रचार आदि के पीछे उनकी ही प्रेरणा थी। 'राष्ट्रोत्थान साहित्य परिषद्' द्वारा 'भारत भारती' पुस्तक माला के अन्तर्गत बच्चों के लिए लगभग ५०० छोटी पुस्तकों का प्रकाशन हो चुका है। यह बहुत लोकप्रिय प्रकल्प है।

उनके नेतृत्व में कर्नाटक में कई बड़े कार्यक्रम हुए। १९४८ तथा ६२ में बेंगलौर में क्रमशः ८ तथा १० हजार गणवेशधारी तरुणों का शिविर, १९७२ में विशाल घोष शिविर, १९८२ में बंगलौर में २३,००० संख्या का हिन्दू सम्मेलन, १९६९ में उडुपी में विश्व हिन्दू परिषद् का प्रथम प्रांतीय सम्मेलन, १९८३ में धर्मस्थान में वि.हि.प का द्वितीय प्रांतीय सम्मेलन, जिसमें ७०,००० प्रतिनिधि तथा एक लाख पर्यवेक्षक शामिल हुए। विवेकानंद केन्द्र की स्थापना तथा मीनाक्षीपुरम् कांड के बाद हुए जनजागरण में उनका योगदान उल्लेखनीय है।

प्रशिक्षण द्वारा सेवाव्रती गढ़े भी जा सकते हैं, यादवराव जी की इस सोच ने बेंगलौर में हिंदू सेवा प्रतिष्ठान को जन्म दिया। प्रतिष्ठान ने युवा लड़के–लड़कियों को सोशल सर्विस की ट्रेनिंग देकर तीन साल सुदूर गांवों में सेवा करने भेजा। अब तक इस संस्था के माध्यम से ५००० से अधिक सेवाव्रती प्रशिक्षित किए जा चुके हैं, जिनमें से कइयों ने अपना जीवन इसी कार्य के लिए समर्पित कर दिया। स्वयं जीवन भर बेहद सादगी भरा जीवन जीकर देश व समाज के लिए काम करने वाले यादवराव जी संघ के पहले अघोषित अखिल भारतीय सेवा प्रमुख थे जिन्होंने सेवा विभाग की रचना से पहले संघ को सेवा से जोड़ा।

जीवन के संध्याकाल में वे अस्थि कैंसर से पीड़ित हो गये। २० अगस्त, १९९२ को बंगलौर संघ कार्यालय में ही उन्होंने अपनी जीवन यात्रा पूर्ण की। ■

वीर माता जीजाबाई

महाराष्ट्र के एक गाँव में छोटी-सी बच्ची खेल रही थी। अकस्मात् कुछ यवन सैनिक एक मन्दिर को तोड़ने आ पहुँचे। नन्ही बच्ची ने प्रतिरोध किया तो सैनिकों ने उसका उपहास कर उसे एक तरफ हटा दिया। बच्ची ने कहा- *'मेरे जीते जी मन्दिर को गिराने नहीं दूँगी।'* बच्ची के माता-पिता को सूचना मिली तो वे उसे खींचकर घर ले गये और एक कमरे में बन्द कर दिया।

असहाय बच्ची कमरे की खिड़की से देवालय गिरने का यह दृश्य देख रही थी और दाँत पीसकर आँसू बहाती हुई सैनिकों को चेतावनी दे रही थी कि 'तुम्हें इस पाप का दण्ड देकर रहूँगी।' उस नन्ही बच्ची ने बचपन में जो संकल्प किया उसी संकल्प की पूर्ति हेतु विवाह होने पर अपनी इष्ट देवी माता शिवा भवानी से प्रार्थना की कि मेरे अरमानों को पूरा करने वाला एक धर्मरक्षक पुत्र प्रदान करो।

उस बच्ची जीजाबाई के पवित्र और दृढ़ संकल्प से ही सदा विजयी छत्रपति शिवाजी जैसा महान् इतिहास-निर्माता वीर उनकी कोख से पैदा हुआ। वीर माता जीजाबाई छत्रपति शिवाजी की माता होने के साथ साथ उनकी मित्र, मार्गदर्शक और प्रेरणास्रोत भी थीं। उनका सारा जीवन साहस और त्याग से भरा था। उन्होंने जीवन भर कठिनाइयों और विपरीत परिस्थितियों को झेलते हुए भी धैर्य नहीं खोया।

उन्होंने शिवाजी को महान वीर योद्धा और स्वतन्त्र हिन्दू राष्ट्र का छत्रपति बनाने के लिए अपनी सारी शक्ति योग्यता और बुद्धिमत्ता लगा दी। वे शिवाजी को बचपन से बहादुर और शूरवीरों की कहानियाँ सुनाया करती थीं। गीता और रामायण आदि की कथाएं सुनाकर उन्होंने शिवाजी के बाल हृदय पर स्वाधीनता की लौ प्रज्जवलित कर दी थी। उनके दिए हुए इन संस्कारों के कारण वे आगे चलकर हिंदू समाज का गौरव और संरक्षक ''छत्रपति शिवाजी महाराज''बने, जिन्होंने भारत में हिंन्दू स्वराज्य की स्थापना की।

बाल प्रश्नोत्तरी

बाल मित्रों! यह प्रश्नोत्तरी पाथेय कण के ***१ जुलाई*** *के अंक पर आधारित है। उक्त अंक को आप पढ़ेंगे तो नीचे दिये गये सभी प्रश्नों के उत्तर बड़ी सरलता से दे सकेंगे।*

१. गत १५ जून को लद्धाख सीमा पर भारतीय सैनिक टुकड़ी पर चीनी सैनिकों ने कहाँ हमला किया?
(क) पेगांग झील (ख) गोगरा (ग) गलवान घाटी (घ) हॉट स्प्रिंग

२. १९६७ में भारत-चीन सीमा संघर्ष में ४०० चीनी सैनिक किस क्षेत्र में मारे गये थे?
(क) लद्धाख (ख) सिक्किम (ग) अरूणाचल (घ) डोकलाम

३. इस वर्ष चीन ने नया सुरक्षा कानून अपने किस स्वायत्तशाषी क्षेत्र पर लागू किया है?
(क) हांगकांग (ख) तिब्बत (ग) शिंनजियांग (घ) ताइवान

४. चीन-पाकिस्तान आर्थिक गलियारे पर चीन का निवेश (करोड़ डालर) है?
(क) ५२०० (ख) ६२०० (ग) ७२०० (घ) ८२००

५. भारत-चीन एलएसी के समानान्तर बन रही दरबुक-श्योक-दौलतबेग ओल्ड़ी सड़क की लगभग लम्बाई है?
(क) ४०० किमी (ख) ३५० किमी (ग) ३०० किमी (घ) २५० किमी

६. भारतीय वायुसेना का सर्वाधिक ऊँचाई वाली सैन्य हवाई पट्टी है?
(क) दौलत बेग ओल्डी (ख) अम्बाला (ग) हाशीमारा (घ) जम्मू

७. चीन के साथ हमारा व्यापार घाटा २००३-०४ (११० करोड़ डॉलर) से बढ़कर २०१३-१४ तक कितना हो गया है?
(क) ९२० करोड़ (ख) १८२० करोड़ (ग) ३६२० करोड़ (घ) ७२२० करोड़

८. पंढ़रपुर के श्री विट्ठल मंदिर में किनकी पूजा होती है?
(क) राम-सीता (ख) शिव-पार्वती (ग) ब्रह्मा-सरस्वती (घ) कृष्ण-रुक्मिणी

९. राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने गुरु का स्थान किसे दिया है?
(क) डा.हेडगेवार (ख) गुरु गोलवलकर (ग) भगवाध्वज (घ) दैनिक शाखा

१०. बीजापुर के सैन्य घेरे से शिवाजी महाराज की पन्हालगढ़ दुर्ग से सुरक्षित निकासी में जुलाई १६६० के महान बलिदानी थे?
(क) बाजीप्रभु देशपांडे (ख) आबाजी सोन्देर (ग) बाजी घोरपड़े (घ) ताना जी मालसुरे

(उत्तर इसी अंक में हैं)

पहचानो तो ये महापुरुष कौन हैं?

बाल मित्रों! यहाँ एक वीरांगना का चित्र तथा उनके जीवन के बारे में कुछ संकेत दिये जा रहे हैं। संकेत के आधार पर चित्र को पहचानो और अपने ज्ञान की परीक्षा करो।

- महोबा के चंदेल राजा सालिवान की पुत्री।
- अपने पति की मृत्यु के बाद पुत्र वीरनारायण को सिंहासन पर बिठा उसके संरक्षक के रूप में शासन किया।
- इलाहाबाद के मुगल शासक आसफ खान से जमकर लोहा लिया।

(उत्तर इसी अंक में हैं)

श्रद्धांजलि **श्रीरामजन्मभूमि आन्दोलन से जुड़े**

जय बहादुर सिंह शेखावत नहीं रहे

अयोध्या की राम जन्म भूमि को मुक्त कराने के लिए राजस्थान में जन जागरण कर आंदोलन का नेतृत्व करने वाले विश्व हिंदू परिषद के नेता जय बहादुर सिंह शेखावत ''खाचरियावास'' का गत २ अगस्त को जयपुर में निधन हो गया। ९३ वर्षीय शेखावत का जन्म ३ जून १९२७ को खाचरियावास ठाकुर व न्यायाधीश कल्याण सिंह के यहां पर हुआ था। वे बाल्यकाल से ही राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से जुड़े और जीवन भर हिंदू समाज, देश व धर्म की सेवा में जुटे रहे। वे १९६६ से १९९३ तक विश्व हिंदू परिषद के संयुक्त महामंत्री रहे। जनजाति समाज के उत्थान व गोशालाओं को हर माह राशि एकत्र करके भेजते रहे। **पाथेय कण परिवार श्री जय बहादुर सिंह शेखावत को भावपूर्ण श्रद्धांजलि अर्पित करता है।**

पृष्ठ ९ का शेष ... से जमीन तथा आसमान दोनों जगह ७० किमी की परिधि के लक्ष्यों को अचूक निशाने से नष्ट कर सकती है। बंकरों तथा मजबूत ढ़ांचों को भेदकर तबाह करने की क्षमता इसे लद्दाख जैसे पहाड़ी इलाकों के लिये विशेष उपयोगी बनाते हैं। रफाल विमानों को लम्बी दूरी की मीटियर (मारक क्षमता १५० किमी) तथा स्काल्प (३०० किमी) मिसाइलों से भी सुसज्जित किया जा रहा है। ये दोनों मिसाइलें अपने अचूक निशाने तथा लक्ष्य के साथ अपना मार्ग बदलने की क्षमता के कारण विश्व की सर्वश्रेष्ठ मिसाइलें हैं। इन मिसाइलों से रफाल विमान बिना सीमा पार किये ही पूरे पाकिस्तान तथा चीनी कब्जे वाले तिब्बत क्षेत्र के सारे सैन्य ठिकानों को लक्ष्य बना सकता है।

वायुसेना ने इन विमानों को गेम चेंजर तथा रणनीतिक बढ़त बनाने वाला बताया है। सीमा पर चीन से चलते विवाद के बीच इनका आना बेहद समयोचित कहा जा सकता है। इन विमानों की खरीद से वायुसेना की आधुनिक विमानों की बहुप्रतीक्षित आवश्यकता की पूर्ति होगी; भारतीय वायुसेना की रक्षात्मक तथा मारक क्षमता दोनों बढ़ेंगी। रफाल विमानों के आने से देश के सैन्य बलों का आत्मविश्वास नई ऊँचाई पर है। दुश्मन देशों पर भी इसका सीधा मनौवैज्ञानिक प्रभाव पड़ा है, उनके मन में डर का भाव पैदा हो गया है,पाकिस्तान ने तो अभी से रोना शुरु कर दिया है तथा चीन भी मित्रता की बातें करने लगा है। ■

भूल सुधार – पाथेय कण १६ जुलाई २०२० के अंक में नाथूला पर चीनी सेना के आक्रमण का वर्ष पृष्ठ ३ पर १९७५ छप गया है, जबकि यह १९६७ है । १ अगस्त के अंक में श्रीकृष्ण जन्माष्टमी ११ अगस्त २०२० के स्थान पर १२ अगस्त २०२० पढ़ा जाये। भूल के लिए खेद है।

प्रकृति की अनुपम देन है नीबू

नीबू प्रकृति की अनुपम देन है। इसका स्वाद खट्टा होता है लेकिन इसमें इतने अधिक औषधीय गुण हैं कि लोग सभी ऋतुओं में इसका प्रयोग करते हैं। इसे अमृतफल कहा जाये तो भी अतिशयोक्ति नहीं होगी। यह प्यास तथा गर्मी को शान्त करता है। यह पाचक रसों को उत्तेजित कर मन्दाग्नि वालों की भूख जाग्रत करता है और पाचन क्रिया में सुधार भी लाता है। नीबू में विटामिन-सी प्रचुर मात्रा में पाया जाता है। इसके नियमित सेवन से संक्रामक रोगों से बचाव होता है। नीबू का सेवन खाली पेट करने से ज्यादा लाभ होता है। नीबू के औषधीय लाभ इस प्रकार हैं:-

■ एक नीबू के रस में एक चम्मच अदरक का रस और दो चम्मच शहद मिलाकर दिन में दो-तीन बार चाटने से पेट का दर्द चला जाता है। नीबू की फांक पर काला नमक,भुना जीरा तथा एक चुटकी खाने वाला सोडा डालकर चूसने से भी पेट का दर्द दूर होता है।

■ एक नीबू का रस एक गिलास गुनगुने पानी में निचोड़कर सोने से पहले पी जाएं। कब्ज टूटकर पेट साफ हो जाएगा।

■ एक नीबू को पानी में निचोड़कर उसमें जरा-सा भुना जीरा तथा एक चुटकी काला नमक डालें। इस पानी का सेवन दिन में तीन-चार बार करने से दस्त रुक जाते हैं। यह बड़ा कारगर नुस्खा है।

■ नीबू के थोड़े-से बीजों को सुखा लें। फिर उनको पीसकर चूर्ण बनाएं । २ ग्राम चूर्ण नित्य पानी से सेवन करें। पेट के कीड़े नष्ट होकर मल के साथ बाहर निकल जाएंगे।

■ एक नीबू को गरम करके उसमें सेंधा नमक, भुना जीरा तथा कालीमिर्च भरकर चूसने से मलेरिया में लाभ होता है।

■ नाक के नथुनों में दो-दो बूंद नीबू का रस टपकाने से नाक से खून आना (नकसीर) बंद हो जाता है।

■ उल्टियाँ हो रही हो तो आधे कटे नीबू पर ३-४ पिसी काली मिर्च और जरा-सी शक्कर डालकर धीरे-धीरे चूस लें। इससे उल्टियाँ बंद हो जाती है।

■ एक नीबू के रस में दो चम्मच सरसों का तेल और दो चम्मच पानी मिलाकर बालों की जड़ों में लगायें। एक घंटे बाद सिर को अच्छी तरह धो लें। कुछ दिन के उपयोग से बालों की रूसी दूर हो जाती है तथा बाल गिरना भी बंद हो जाते हैं।

■ एक नीबू के रस में चार चम्मच सूखा पिसा आंवला तथा आवश्यकतानुसार पानी मिलाकर लेप तैयार कर लें। इसे एक घण्टे बाद सिर पर लगा लें। इसके लगभग एक घण्टे बाद बिना साबुन या शैंपू के मात्र जल से सिर धो लें। यह प्रयोग हर चौथे दिन करने से कुछ ही दिनों में बाल काले होने शुरू हो जाते है।

■ नीबू चूसने तथा इसका छिलका दाँतों व मसूड़ों पर रगड़ने से दांतों के पायरिया रोग (खून आना) में लाभ होता है।

■ प्रातःकाल खाली पेट एक-दो गिलास ठंडे पानी में नीबू का रस शहद मिलाकर लेने से शरीर की अच्छी सफाई होती है।

शैक्षिक मंथन संस्थान द्वारा राष्ट्रीय शिक्षा नीति पर संगोष्ठी

शैक्षिक मंथन संस्थान द्वारा राष्ट्रीय शिक्षा नीति पर संगोष्ठी का आयोजन किया गया एवं इस अवसर पर संस्थान के शुभंकर का लोकार्पण भी हुआ। मुख्य वक्ता के रूप में अपने उद्बोधन में संस्थान के अध्यक्ष प्रोफेसर जेपी सिंघल ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति का स्वागत करते हुए कहा कि पांचवी कक्षा तक अनिवार्य रूप से मातृभाषा में शिक्षा देने तथा यथासंभव आठवीं और उसके पश्चात उच्च शिक्षा तक मातृभाषा में शिक्षा देने को बढ़ावा देने का प्रावधान स्वागत योग्य कदम है।

शिक्षा की सार्वभौमिक पहुंच के लिए जन्म, पृष्ठभूमि और लिंग पर भेद ना करते हुए समान अवसर उपलब्ध करवाना व्यक्ति और समाज के सर्वांगीण विकास के लिए अत्यंत आवश्यक है। इसे शिक्षा नीति में ठीक प्रकार उठाया गया है। पारदर्शी आधार पर शिक्षकों की नियुक्ति की व्यवस्था, शिक्षकों की गरिमा को पुनः बहाल करने तथा शैक्षिक प्रशासन में भागीदारी की व्यवस्था सराहनीय है।

संगठन मंत्री महेंद्र कपूर ने बताया कि शिक्षा नीति में भारतीय जीवन मूल्यों, परंपराओं और भारतीय भाषाओं को प्रोत्साहन देने के लिए शिक्षा के प्रत्येक स्तर पर पाठ्यक्रम में इनका समावेश एक समर्थ, गौरवशाली और आत्मनिर्भर भारत बनाने में निश्चय ही प्रमुख भूमिका निभाएगा।

संस्कृत भारती ने मनाया संस्कृत सप्ताह

संस्कृत भारती द्वारा आयोजित संस्कृत सप्ताह का गत ३१ जुलाई को शुभारम्भ हुआ। इस अवसर पर संस्कृत भारती जयपुर प्रान्त द्वारा उद्घाटन समारोह का आयोजन ऑनलाइन किया गया । कार्यक्रम में मुख्य वक्ता राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के अखिल भारतीय कार्यकारिणी सदस्य तथा घुमन्तु जाति परियोजना प्रमुख श्री दुर्गादास थे। इस अवसर पर श्री दुर्गादास ने कहा कि आज विश्व में अंग्रेजी का बोलबाला है। किंतु अंग्रेजी का व्याकरण संस्कृत जितना सुव्यवस्थित व प्रामाणिक नहीं है। नासा में आज संस्कृत को अपनाया जाने लगा है। कम्प्यूटर तथा अंतरिक्ष के लिए श्रेष्ठ भाषा संस्कृत है।

कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रांत अध्यक्ष डॉ. हरिशंकर भारद्वाज ने की। प्रांत मन्त्री डॉ. पवन व्यास ने धन्यवाद ज्ञापन किया। संस्कृत सप्ताह श्रावणी पूर्णिमा के तीन दिन पहले तथा तीन दिन बाद तक चलता है। श्रावणी पूर्णिमा के दिन संस्कृत दिवस मनाया जाता है।

उत्तर महापुरुष पहचानो- रानी दुर्गावती

मस्जिदों से लाउड स्पीकर हटवाने की मांग

मस्जिदों से लाउडस्पीकर हटवाने की मांग को लेकर राम सेवा संघ के पदाधिकारियों ने आज जयपुर कलक्टर को ज्ञापन सौंपा। ज्ञापन में कहा गया है कि ध्वनि प्रदूषण मुक्त नींद का अधिकार जीवन के मूल अधिकारों का हिस्सा है। किसी को भी अपने मूल अधिकारों के लिए दूसरे के मूल अधिकारों का उल्लंघन करने का अधिकार नहीं है। एक निश्चित फ्रीक्वेंसी से तेज आवाज में बिना अनुमति कुछ भी बजाने की छूट किसी को भी नहीं है।

धार्मिक मान्यताओं के अंतर्गत इस्लाम और स्वीकृत हदीस में कहीं भी इस बात का विवरण नहीं मिलता की अजान लाउडस्पीकर के माध्यम से दी जाए।

ऐसे में रात १० बजे से सुबह ६ बजे तक स्पीकर की आवाज पर रोक का कानून है। सिर्फ वही मस्जिदें लाउडस्पीकर का इस्तेमाल कर सकती हैं, जिन्हें अनुमति मिली है। अतः उन सभी लाउडस्पीकर को हटवाया जाए जो बिना अनुमति के मस्जिदों पर लगे हुए है।

भारतीय संविधान के अनुच्छेद १९ व २५ का उल्लंघन मानते हुए लाउडस्पीकर शीघ्र मस्जिदों से हटवाए जाने की कार्रवाई की मांग ज्ञापन में की गई है।

भारतीय नागरिकता मिलने पर लगाये भारत माता के जयकारे

पाकिस्तान में मुस्लिमों द्वारा किए जाने वाले अत्याचार से दुःखी होकर भारत आए विस्थापितों के चेहरे पर अपार खुशी व सुकून देखने को मिला, जब गत३० जुलाई को जयपुर जिला कलक्टर अंतर सिंह नेहरा ने उन्हें भारतीय गणतंत्र की नागरिकता के प्रमाण पत्र सौंपे। नागरिकता मिलने की खुशी में विस्थापित परिवारों ने भारत माता की जय और वंदेमातरम के जयघोष लगाए तो कलक्टर का चैम्बर गूंज उठा। जयपुर जिला कलक्टर ने ७ पाक विस्थापितों का जीवन का सबसे बड़ा सपना पूरा करते हुए नागरिकता के प्रमाणपत्र सौंपे।

इनमें से कई लोग लगभग २० वर्षों से भारत की नागरिकता के इंतजार में विस्थापित जीवन व्यतीत कर रहे थे। विस्थापित कल्याण, रोशन कुमार, सुगना देवी, अनीता देवी, शबरीन, सिकन्दर कुमार और मोहनी को भारतीय नागरिकता का प्रमाण पत्र मिलते ही इनकी आंखें भर आई। लोगों ने आपस में मिठाइयां खिलाकर खुशी मनाई।

प्रमाण पत्र प्राप्त कर भारतीय नागरिक बन चुके सिकन्दर कुमार ने बताया कि भारतीय नागरिक नहीं होने के कारण सरकारी योजनाओं का लाभ लेने में परेशानी होती थी। लेकिन अब भारतीय नागरिक होने का प्रमाण पत्र मिलने से हम सरकारी योजनाओं का लाभ भी ले सकेंगे। भारतीय नागरिक होने पर उन्हें गर्व है।

वामपंथियों–मौलाना आजाद ने इतिहास से छेड़छाड़ की

पूर्व सीबीआई निदेशक और सेवारत आईपीएस अधिकारी, एम.नागेश्वर राव ने दावा किया है कि 'खूनी इस्लामिक आक्रमण/शासन' काल के भारतीय इतिहास पर 'लीपापोती' की गई है। उन्होंने इसके लिए आजादी के बाद ३० सालों के शिक्षा मंत्रियों को जिम्मेदार ठहराया, जिन्होंने 'लेफ्ट और अल्पसंख्यकों के शिक्षाविदों और स्कॉलरों को आगे बढ़ाया, हिंदू राष्ट्रवादी शिक्षाविदों को दरकिनार किया।' उन्होंने मौलाना अबुल कलाम आजाद, हुमायुं कबीर, एम सी छागला, फखरुद्दीन अली अहमद, नुरुल हसन और वीकेआरवी राव का उल्लेख किया।

इन शिक्षा मंत्रियों के काल में विकृत शिक्षा पद्धति तथा योजनापूर्वक हिंदू संस्कृति का अब्राहमनीकरण (केवल अब्राहम को ईश्वर अवतार मानने वाले–इस्लाम, ईसाई तथा यहूदी धर्म) करके हिंदुओं को अपने तत्व ज्ञान से दूर किया, उन्हें अंधविश्वासी बता बदनाम किया उनकी हिंदू पहचान के लिए उनमें शर्मिंदगी का भाव पैदा किया। इसके विपरीत विदेशी मुस्लिम आक्रान्ताओं के खूनी कारनामों को इतिहास में भाईचारे तथा सद्भाव वाला शासन बताया।

रूस ने रोकी एस–४०० मिसाइलों की चीन को डिलीवरी

रूस ने चीन को एस–४०० मिसाइल डिफेंस सिस्टम की डिलीवरी रोक दी है। चीन ने इसे दबाव में लिया गया फैसला बताया है। न्यूज एजेंसी के मुताबिक, ''इस बार रूस ने साफ कर दिया है कि वो चीन को एस–४०० मिसाइल की डिलीवरी रोक रहा है।'' भारत को इस मिसाइल सिस्टम की पहले खेप इसी साल मिलने वाली है।

एस–४०० दुनिया का सबसे बेहतरीन मिसाइल डिफेंस सिस्टम है। यह ४०० किलोमीटर के दायरे में आने वाली मिसाइलों और पांचवी पीढ़ी के लड़ाकू विमानों का भी पता लगाकर उन्हें नष्ट कर देता है।

सेवा सदन में लगाए औषधीय–फलदार पौधे

राममंदिर के भूमिपूजन के शुभ अवसर पर गत ५ अगस्त को जयपुर में सहकार मार्ग स्थित सेवा सदन में औषधीय तथा फलदार पौधे लगाए गए। संघ के वरिष्ठ प्रचारक श्री स्वांत रंजन, श्री प्रकाश चंद, श्री दुर्गादास, श्री शिवलहरी, श्री सुदामा आदि द्वारा पौधारोपण किया गया।उल्लेखनीय है कि राष्ट्रीय स्वंसेवक संघ की गतिविधियों में पर्यावरण संरक्षण भी प्रमुख गतिविधि है।

''स्वदेशी स्वावलंबन की ओर भारत'' पुस्तक का विमोचन

स्वदेशी जागरण मंच जयपुर द्वारा २६ जुलाई को एक वेबिनार का आयोजन किया गया, जिसमें अखिल भारतीय विचार प्रमुख सतीश कुमार द्वारा लिखित पुस्तक ''स्वदेशी स्वावलंबन की ओर भारत'' का विमोचन हुआ। पुस्तक का विमोचन राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के क्षेत्रीय प्रचारक श्री निंबाराम ने किया।

इस अवसर पर श्री निंबाराम ने कहा कि स्वदेशी की भावना ही देश के आर्थिक सामाजिक और सांस्कृतिक समुत्कर्ष का आधार व राष्ट्रभक्ति की साकार अभिव्यक्ति है। आर्थिक प्रगति की दृष्टि से देश में बिकने वाली वस्तुएं और सेवाएं पूरी तरह से देश में ही उत्पादित होने पर देश में रोजगार का सृजन होगा, जिससे देशवासियों को नियमित आय की प्राप्ति और सरकार के लिए राजस्व वृद्धि संभव है।

उन्होंने आगे कहा कि देश में ६ करोड़ ७० लाख सूक्ष्म, लघु व मध्यम आकार के उद्यम हैं। इनमें १२ करोड़ से अधिक लोग नियोजित हैं और इन लघु उद्योगों के द्वारा ६००० से अधिक प्रकार के उत्पादों या वस्तुओं का उत्पादन व कारोबार किया जाता है। देश के लिए आवश्यक है कि हम अपनी खरीदारी में रोजगार प्रधान स्थानीय उद्योगों व लघु उद्योगों की वस्तुओं को प्राथमिकता प्रदान करें।

गो–संरक्षण के लिए एक पांव पर खड़े रहकर अनशन

नित प्रतिदिन हो रही गोतस्करी व गोहत्या के विरोध में जोधपुर के संत दयानंदगिरी महाराज ने नौ दिनों तक एक पांव पर खड़े होकर अनशन किया।

संत जी की व्यथा है कि सरकार द्वारा गोसेवा के नाम पर करोड़ों रुपए खर्च करने व स्टाम्प डयूटी पर गो सेस वसूलने के बावजूद प्रदेश में गोवंश की दुर्दशा हो रही है। गोचर भूमि पर अवैध कब्जों के चलते शहर ही नहीं गांव–ढाणियों तक में गोवंश बिना धणी–धोरी के आवारा विचरण कर रहा है। जिन्हें पकड़कर तस्करों द्वारा महंगे दामों में बेचकर गोहत्या को बढ़ावा दिया जा रहा है।

संत के अनशन को मिले समाज के समर्थन के बाद उपखण्ड अधिकारी ने उनकी मांगों को पूरा करने का आश्वासन दिलाते हुए अनशन समाप्त कराया। एसडीएम ने अनशन स्थल पर पहुंचकर बताया कि सरकार की योजनांतर्गत ५० लाख रुपए नंदीशाला के लिए देने की घोषणा की गई थी, अब इसके लिए इंडस्ट्रियल एरिया के सामने की जमीन आवंटन के लिए चयनित की गई है। वहीं गोचरभूमि मुक्त करवाने के लिए एक कमेटी का गठन किया जाएगा। तस्करी रोकने के लिए पुलिस को निर्देश दिए जाएंगे। इसके बाद जूस पिला कर संत का अनशन समाप्त करवाया गया।

उत्तर बाल प्रश्नोत्तरी - १.(ग) २.(ख) ३.(क) ४.(ख) ५.(घ) ६.(क) ७.(ग) ८.(घ) ९.(ग) १०.(क)

५० परिवारों ने अपनाया हिंदू धर्म, कहा घर को वापसी की

सिणधरी उपखण्ड (जिला बाड़मेर) के मोतीसरा गांव में रहने वाले ५० परिवारों के लगभग २५० लोगों ने गत ५ अगस्त को अयोध्या में श्रीराम मन्दिर के भूमि पूजन के दिन हिंदू धर्म ग्रहण किया। बुजुर्ग सुभानराम तथा हरजीराम, हंसराज ने बताया कि,''*हमारे पूर्वज हिंदू ही थे,हमारे परिवार पिछले कई वर्षों से हिंदू रीति रिवाजों का पालन करते हैं, हिन्दू त्यौहार घर पर मनाते हैं। कभी धर्म परिवर्तन करवाया गया, इस इतिहास की जानकारी होने के बाद हमने विचार किया और सभी परिवारों ने हिन्दू धर्म में वापसी की इच्छा जताई। आज जन्मभूमि पर श्रीराम मंदिर के शिलान्यास के अवसर पर हम सभी ने घर पर हवन-यज्ञ करा जनेऊ पहनी और परिवार के सभी सदस्यों ने हिंदू धर्म में वापसी की।*''

इस अवसर पर जोगानंद मठ के मठाधीश बालकानंद सरस्वती, पायला कला के महंत राम भारती, जेतेश्वर धाम के महंत पारसराज महाराज, गांव के सरपंच ठाकराराम सारण, ढाढी समाज तथा गांव के गणमान्य व्यक्तियों सहित बड़ी संख्या में लोग उपस्थित रहे।

चीन पर एक और डिजिटल स्ट्राइक-४७ एप्स पर प्रतिबन्ध

५९ चीनी एप्स पर प्रतिबंध लगाने के बाद भारत सरकार ने चीन पर एक और डिजिटल स्ट्राइक करते हुए ४७ मोबाइल एप्स पर प्रतिबंध लगा दिया है। जानकार सूत्रों के अनुसार ये सभी एप्स पहले के प्रतिबंधित ५९ एप्स के क्लोन (प्रतिरूप) और लाइट (हल्के) संस्करण हैं। इनमें टिकटाक लाइट, हेलो लाइट, शेयरइट लाइट, बिगो लाइव लाइट जैसे एप्स शामिल हैं।

इस प्रकार भारत सरकार ने १०६ चीनी मोबाइल एप्स को प्रतिबंधित कर दिया है, जिन पर चीनी प्रोपोगेंडा फैलाने, देश की संप्रभुता पर खतरा, यूजर डेटा को देश से बाहर ले जाने तथा यूजर की निजता के दुरूपयोग के आरोप हैं। यह भी खबर है कि सरकार ने २७५ चीनी मोबाइल एप्स की लिस्ट बनाई है, जिन की जांच चल रही है और उन पर आने वाले समय में प्रतिबंध लग सकता है।

तालिबान से प्रताड़ित ११ सिख भारत आए

अफगानिस्तान में प्रताड़ित ११ सिख गत २६ जुलाई को भारत आए। इनमें तालिबानियों से बचाई गई नाबालिग बालिका तथा गुरुद्वारे से अगवा किये गये निदान सिंह शामिल हैं। इन सिखों ने नई दिल्ली पहुँच कर कहा कि हिन्दुस्तान ही हमारा माता-पिता है।

अफगानिस्तान के पकटिया प्रांत के गुरुद्वारे से निदान सिंह का तालिबानियों ने अपहरण कर लिया था, जिन्हें भारत की कोशिश से रिहा करवाया जा सका। निदान सिंह के साथ १६ वर्ष की नाबालिग बालिका को भी बचाया गया, जिसे तालिबानी जबरन मुस्लिम बना निकाह करना चाह रहे थे।

उल्लेखनीय है कि इसी वर्ष मार्च में अफगानिस्तान में गुरुद्वारे पर तालिबानी हमले में २५ सिख श्रद्धालुओं की हत्या हुई थी। पाकिस्तान तथा अफगानिस्तान में अल्पसंख्यक सिखों सहित हिन्दुओं पर कट्टरपंथियों के हमले, बच्चियों-महिलाओं का अपहरण, जबरन धर्मान्तरण तथा निकाह के मामले निरन्तर जानकारी में आते हैं। इन अल्पसंख्यकों के लिये गत वर्ष पारित नागरिकता संशोधन कानून (सीएए) राहत देने वाला सिद्ध होगा।

संघ स्वयंसेवकों ने प्रकाश फुलवारिया का किया सम्मान

राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की १२ वीं कक्षा कला वर्ग में प्रथम स्थान प्राप्त करने वाले छात्र प्रकाश फुलवारिया का उनके ग्राम लोहारवा में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के स्वयंसेवकों द्वारा अभिनंदन तथा सम्मान किया गया।

इस अवसर पर संघ के बाड़मेर जिला संघचालक श्री रिखबदास बोथरा ने कहा कि भौतिक सुख सुविधाओं से दूर, गांव में परिवार के साथ रहते हुए, खेती के काम में हाथ बंटाते हुए एक सरकारी विद्यालय में अध्ययन करते हुए प्रकाश ने जो कीर्तिमान स्थापित किया है, वह प्रशंसनीय है तथा अन्य विद्यार्थियों के लिये प्रेरणादायी तथा अनुकरणीय है।

इस अभिन्दन समारोह में धोरीमना तथा गुडामालानी के संघ के पदाधिकारियों के साथ ही बड़ी संख्या में स्वयंसेवक तथा गांव के गणमान्य लोग उपस्थित थे।

प्रकाश ने सभी महानुभावों को धन्यवाद देते हुए आश्वासन दिया है कि वह भविष्य में भी सभी की आकांक्षाओं पर खरा उतरेगा।

सूरीनाम राष्ट्रपति ने हाथ में वेद रख, संस्कृत में शपथ ली

दक्षिणी अमरीकी देश सूरीनाम के राष्ट्रपति का गत माह हुआ शपथ ग्रहण समारोह भारत के लिये गर्व का विषय है। सूरीनाम के नव निर्वाचित राष्ट्रपति चन्द्रिका प्रसाद संतोखी ने गत १६ जुलाई को पद की शपथ लेते समय सनातन धर्म की अमूल्य निधि वेद को अपने हाथ में धारण कर मंत्रोच्चार के बीच देवभाषा संस्कृत में शपथ ली।

भारतवंशी संतोखी नीदरलैण्ड की पुलिस एकेडमी से शिक्षित होने के बाद २३ वर्ष की उम्र में सूरीनाम में पुलिस इंस्पेक्टर, १९८९ में राष्ट्रीय अपराध अन्वेषण विभाग के मुखिया तथा १९९१ में मुख्य पुलिस कमिश्नर बने। प्रधानमंत्री मोदी ने २६ जुलाई को ६७ वीं 'मन की बात' में इस घटना का जिक्र करते हुए उन्हें १३० करोड़ भारतीयों की ओर से शुभकामनाएँ दी।

भारतीय राखियों ने चीन को दिया ४००० करोड़ का झटका

स्वदेशी जागरण मंच तथा अखिल भारतीय व्यापारी परिसंघ (कैट) का अभियान रंग लाया और राखी त्यौहार पर चीन के ४००० करोड़ रुपये के राखी व्यापार को बड़ा झटका लगा है। कैट ने गत १० जून से शुरु किये गये चीनी सामान के बहिष्कार के तहत इस वर्ष राखी के पर्व पर चीनी राखियों के आयात तथा बिक्री नहीं करने का आह्वान किया था, जो पूर्ण रूप से सफल रहा। इस बार एक भी राखी या राखी बनाए जाने का सामान चीन से आयात नहीं किया गया। प्रधानमंत्री के आत्मनिर्भर भारत तथा स्वदेशी जागरण मंच के स्वदेशी अपनाओ अभियान को जनता ने पूरा समर्थन दिया तथा राखियाँ घरों तथा सूक्ष्म उद्यमियों द्वारा बना बाजार में उपलब्ध कराई गई। स्वदेशी जागरण मंच तथा प्रेरणा पब्लिक स्कूल, गोनेर रोड़, जयपुर ने बच्चियों को घर पर राखी बनाने को प्रोत्साहन देने के लिये आयुवर्ग के हिसाब से राखी बनाओ प्रतियोगिता का आयोजन भी किया। यह भी उल्लेखनीय है कि कैट के सहयोग से भारतीय सामान का उपयोग करते हुए लगभग १ करोड़ राखियाँ निम्न वर्ग की बस्तियों, आंगनबाड़ी में तथा घरों में काम करने वाली महिलाओं सहित अन्य लोगों ने अपने हाथों से नए-नए डिजाइन की बनाई। देशभर के अनोखे प्रयोगों में कच्छ के मनोज सोलंकी ने अपनी गौशाला में गाय के गोबर को प्रोसेस कर राखियाँ बनाई। अच्छी सजावट और पेकिंग के कारण गोमय निर्मित राखियाँ भी फैन्सी राखियों को टक्कर देती हैं।

लाहौर में गुरुद्वारा तोड़कर बना दी मस्जिद

पाकिस्तान से एक बार फिर अल्पसंख्यकों के धार्मिक उत्पीड़न का बड़ा मामला प्रकाश में आया है। लाहौर के नौलखा बाजार स्थित गुरुद्वारे को तोड़कर वहां मस्जिद बना दी गई है। इस गुरुद्वारे को शहीदी स्थान भी कहते हैं क्योंकि सन् १७४५ में यहां भाई तारूसिंह जी ने महान बलिदान दिया था। इस्लाम स्वीकार नहीं करने पर मुगल सूबेदार जकारिया खां ने भाई तारूसिंह की खोपड़ी उतरवा दी थी। यह एक ऐतिहासिक घटना है और सिख समुदाय इस गुरुद्वारे को बहुत पवित्र मानते हैं। गुरुद्वारे की जमीन पर अतिक्रमण २०१२ से ही शुरू हो गया था, जब परिसर में जबरदस्ती एक मजार बना दी गई।

इस मामले को भारत के विदेश मंत्रालय द्वारा पाकिस्तान उच्चायोग के साथ उठाने पर पाकिस्तान का कहना है कि यह मस्जिद शहीद गंज है। भारत ने पाकिस्तान पर गुरुद्वारे का नाम बदलने की कोशिश करने का आरोप लगाते हुए मामले की जांच करने और उचित कार्रवाई करने को कहा है। साथ ही पाकिस्तान को वहां रह रहे अल्पसंख्यकों की सांस्कृतिक, सामाजिक और धार्मिक सुरक्षा सुनिश्चित करने को भी कहा है।

भीमा कोरेगांव मामले में एनआईए ने दिल्ली यूनिवर्सिटी के प्रोफेसर को गिरफ्तार किया

नेशनल इन्वेस्टीगेशन एजेन्सी (एनआईए) ने भीमा कोरेगांव यलगार परिषद मामले में गत २८ जुलाई को दिल्ली यूनिवर्सिटी के प्रोफेसर हनी बाबू को गिफ्तार किया गया है। एनआईए की जाँच में पता लगा कि वह नक्सली गतिविधियों में संलग्न तथा माओवादी विचारधारा फैलाने में संलिप्त था। हनी बाबू पर अन्यों के साथ साजिश रचने में शामिल होने का भी आरोप है। एनआईए ने गत १४ अप्रेल को इस मामले में आनंद तेलतुंबड़े और गौतम नौलखा को गिफ्तार किया था।

उल्लेखनीय है कि ३१ दिसम्बर २०१७ को यलगार परिषद् का सम्मेलन आयोजित किया गया था। इसमें दिये गये भड़काऊ भाषणों के कारण अगले दिन १ जनवरी २०१८ को पुणे जिले के भीमा कोरेगांव युद्ध स्मारक के निकट हिंसा हुई, जिसमें जान-माल का भारी नुकसान हुआ था। इस मामले में अब तक १६ लोगों को आरोपी बनाया गया है जिनका संबंध प्रतिबंधित सीपीआई (माओवादी) तथा कबीर कला मंच से बताया जाता है।

लालू यादव रिम्स निदेशक के बंगले में शिफ्ट

चारा घोटाले में जेल की सजा काट रहे लालू यादव को झारखंड में उनकी पार्टी की साझा सरकार विशेष से विशेष अतिथि की सुविधा दे रही है। जानकारी के अनुसार लालू जी जेल में कम और पांच सितारा सुविधा के साथ अस्पताल या गेस्ट हाउस में घर से भी ज्यादा ठाट के साथ रखे जा रहे हैं।

गत दिनों लालू जी को इलाज तथा कोरोना से बचाने के बहाने रिम्स (रांची स्थित एम्स अस्पताल) के निदेशक के बंगले में शिफ्ट किया गया है। लगभग २ एकड़ में फैले बंगले में उनकी सेवा के लिए ५ सेवाकर्मी भी दिये जा रहे हैं। उल्लेखनीय है कि इससे पहले लालूजी रिम्स के जिस वार्ड में थे, उस तल के सभी १८ कमरों को खाली करवा दिया गया था जिससे कोरोना के मरीजों को बेड नहीं मिल रहे थे।

स्वतन्त्र बंगला मिल जाने से राष्ट्रीय जनता दल के सुप्रीमो के लिए आगामी बिहार विधानसभा चुनावों की मंत्रणाएं करना सुविधाजनक होगा। गठबंधन की बैसाखी के चलते झारखंड की सरकार भी उनकी सेवा के लिए मजबूर है।

लोगों के तानों का आईएएस बन कर दिया जवाब : आरती डोगरा

देहरादून (उत्तराखंड) की विजय कालोनी की निवासी आरती डोगरा की ताकत और हिम्मत देखकर लोग अपने बच्चों को उनकी तरह बनने की सीख देते हैं, लेकिन एक समय था जब उनकी कम ऊंचाई के कारण लोग ताना मारते थे, उनका मजाक बनाते थे। लेकिन इन तानों और मजाक ने उनमें हीन भावना के स्थान पर हिम्मत पैदा की। उन्होंने तय कर लिया कि एक दिन अपनी मेहनत और योग्यता से इस कमी को छोटा साबित कर देंगी।

आरती को पता था कि कद-काठी या उम्र केवल एक संख्या मात्र होती है, लेकिन ज्ञान ऐसी चीज है जो यदि किसी के पास हो तो उसे सभी पूछते हैं। और उसी विश्वास के साथ उन्होंने अपनी पढ़ाई पर पूरा ध्यान दिया। देहरादून के वेल्हम गर्ल्स स्कूल से पढ़ने के बाद उन्होंने दिल्ली विश्वविद्यालय के श्रेष्ठ महाविद्यालय 'लेडी श्रीराम कालेज' से अर्थशास्त्र में स्नातक डिग्री ली। स्नातकोत्तर पढ़ाई के लिए वे पुनः देहरादून गई। स्नातकोत्तर की पढ़ाई के बीच उनकी भेंट उत्तराखंड की पहली महिला आईएएस मनीषा पंवार से हुई। मनीषा पंवार ने आरती की शिक्षा और मेहनत को देखते हुए, उसे संघ लोक सेवा आयोग की तैयारी करने की सलाह दी, जो अखिल भारतीय सेवा की परीक्षाएं आयोजित करता है। आरती को मनीषा पंवार की सलाह अपने लक्ष्य के रूप में मिली और वह उसकी तैयारी में जुट गई। २००५ में वह इस परीक्षा में बैठी और पहले प्रयास में ही न केवल सफल हुई, बल्कि अखिल भारतीय स्तर पर ५६वीं रेंक प्राप्त कर आईएएस में चयनित हो गई।

वर्ष २००६-०७ में आईएएस का प्रशिक्षण पूरा करने के बाद उनकी पहली नियुक्ति उदयपुर अतिरिक्त जिला मजिस्ट्रेट के रूप में हुई। उसके बाद वे अलवर, ब्यावर (अजमेर जिला) में एसडीएम रहीं। २०१० में उन्हें बूंदी जिलाधीश का दायित्व मिला। तत्पश्चात वे बीकानेर और अजमेर जिलाधीश बनी।

आरती डोगरा ने अपने काम से लोगों के बीच अलग ही पहचान बना ली है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी भी उनके काम की प्रशंसा कर चुके हैं। बीकानेर में जिला कलेक्टर रहते आरती ने ''बंको बिकाणो'' अभियान की शुरुआत की। इसमें लोगों को खुले में शौच ना करने के लिए प्रेरित किया गया।

गांव-गांव पक्के शौचालय बनवाए गए जिनकी मॉनीटरिंग मोबाइल साफ्टवेयर के जरिए की जाती थी। उनका यह अभियान १९५ ग्राम पंचायतों में चलाया गया और बाद में देश की कई स्थानों पर इस पैटर्न पर काम किया गया। ■

पहाड़ काट निकाल ली राह - गंगापुर का सफर हुआ आसान

यह कहानी जज्बे की है; माउंटेनमेन दशरथ मांझी से प्रेरणा की है। झारखंड के धनबाद जिले के ग्रामीणों द्वारा प्रशासन और जन प्रतिनिधियों से बार-बार अनुरोध करने के बाद भी उनकी दुर्दशा दूर नहीं हुई। संथाल बहुल गांव गंगापुर धनबाद और गिरिडीह के जिला मुख्यालय से (४० किमी. से अधिक दूर) समान दूरी पर है। लेकिन ग्रामीण मुख्य रूप से सेवाओं के लिये गिरिडीह पर निर्भर हैं।

धनबाद जिले के बाघमारा प्रखंड के गांव गंगापुर में ग्रामीणों ने लॉकडाउन काल में श्रमदान किया और लगभग २२ दिन में (मई-जून २०२०) पहाड़ काट कर २ किमी लम्बी और १० फीट चौड़ी कच्ची सड़क बना दी। आदिवासी समुदाय के गंगापुर तथा बस्ती कुल्ही के लगभग एक सौ लोगों ने अपने कठिन परिश्रम से इस काम को पूरा किया। सड़क निर्माण में महिलाओं की भी सक्रिय भागीदारी रही। उन्होंने न केवल सड़क पर काम करने वाले ग्रामीणों को समय पर खाना (प्रायः भात के साथ आलू का चोखा) पहुँचाया बल्कि कइयों ने पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर काम किया।

विशेष बात यह है कि सड़क बनाने में एक भी पेड़ काटा नहीं गया। सड़क बनाने में मशीन के स्थान पर साबल, गेंती और कुदाल काम में ले पहाड़ को समतल बना दिया। सड़क निर्माण का बीड़ा उठाने वाले गंगापुर के सुरेश टुडू ने बताया, ''*पहले अन्य राज्यों में निर्माण क्षेत्र में लगे होने से हमें इस तरह के काम का अनुभव था। इसलिये इस सेवा कार्य के लिये हमने अन्य ग्रामीणों और प्रवासी श्रमिकों को जुटाने का फैसला किया। यह एक सामुदायिक प्रयास था।*'' गंगापुर और आसपास के गाँवों में लगभग ५० प्रतिशत युवा निर्माण और अन्य उद्योगों में काम करने के लिये केरल और गुजरात जाते हैं। वे कोरोना वायरस तथा लॉकडाउन के दौरान अपने घरों को लौट आये थे। पहले गिरिडीह जिले की सीमा में प्रवेश के लिये ३५ किमी का सफर करना पड़ता था, अब सड़क बन जाने से बस्ती कुल्ही होते हुए चिरकी के रास्ते दूरी काफी कम हो गई है। सड़क बन जाने से आज यहाँ साइकिल तथा दो पहिया वाहन चल रहे हैं। सड़क नहीं होने की वजह से पड़ोसी जिले की रिश्तेदारी में नहीं जा पाते थे। अब सुविधा हो गई है।

उनका मानना है कि स्वास्थ्य कार्यों को लेकर भी यह सड़क वरदान साबित होगी। उम्मीद है कि स्वास्थ्य देखभाल के लिये साइकिल से पहले जहां २ घंटे लग जाते थे, अब इस सड़क के रास्ते १०-१५ मिनट में गिरिडीह तक पहुँचने में सक्षम होंगे। ■

राष्ट्रोन्नायक आचार्य शंकर

३५

आलेख व चित्र
ब्रजराज राजावत

आचार्य अब कश्मीर शारदापीठ मन्दिर पहुँचे... मंदिर की 'सर्वज्ञ-पीठ' थी... पीठ ग्रहण करने वाला सर्वज्ञ और परा विज्ञान प्राप्त होना चाहिए... जो भी विद्वान पंडित वहां आता, उसे वहां उपस्थित पंडितों से शास्त्रार्थ कर अपनी योग्यता सिद्ध करनी होती। किंतु अब तक कोई सफल नहीं हो पाया था।

आचार्य शंकर के पहुँचते ही स्थानीय पंडितों, विद्वानों में खलबली मच गई।

विभिन्न विद्वान पंडित आचार्य से शास्त्रार्थ के लिए एकत्र हुये...इनमें कणाद के वैशेषिक दर्शन, गौतम के नैयायिक दर्शन, कपिल के सांख्य दर्शन, जैमिनी के मीमांसा दर्शन तथा बौद्ध सौत्रान्तिक दर्शन के प्रकाण्ड पण्डित भी उपस्थित थे। अंततः आचार्य विजयी हुए।

पाक्षिक
पाथेय कण
१६ अगस्त, २०२०

आर.एन.आई.पंजीयन क्र. ४८७६०/८७ अग्रिम शुल्क बिना प्रेषण की अनुमति लाइसेंस संख्या
डाक पंजीयन संख्या JAIPUR CITY /२०२/२०१८-२० JAIPUR CITY/ WPP - ०१/२०१८-२०

श्रीराम मंदिर भूमि पूजन के अवसर पर न्यूयार्क टाइम्स स्क्वायर पर दिखी श्रीराम तथा मंदिर की झलक

न्यूयार्क में श्रीराम मंदिर निर्माण की खुशियाँ मनाते भारतवंशी

श्रीलंका के सांसद श्री सेनाथम्बी द्वारा राम मंदिर निर्माण के लिए सोने की ईंट भेंट की गई

श्रीराम मंदिर निर्माण के लिए हुए भूमि पूजन की खुशी में जानकी मंदिर (नेपाल) में उत्सव

मंदिर निर्माण भूमि पूजन के अवसर पर सरयू घाट (अयोध्या) पर दीपमालिका

श्रीराम मंदिर भूमि पूजन के बाद श्रीकृष्ण जन्मभूमि मंदिर (मथुरा) पर दीपमालिका

स्वत्वाधिकारी पाथेय कण संस्थान के लिये प्रकाशक एवं मुद्रक माणक चन्द
द्वारा कुमार एण्ड कम्पनी,ए-१०,२२ गोदाम औद्योगिक क्षेत्र, जयपुर से मुद्रित
प्रकाशकीय कार्यालयः पाथेय भवन, ४, मालवीय संस्थानिक क्षेत्र, मालवीय नगर, जयपुर-३०२०१७
सम्पादकः मेघराज खत्री
प्रेषण दिनांक १६,१७,१८,१९ व २० अगस्त २०२० आर.एम.एस.(पी.एस.ओ.) जयपुर

प्रतिष्ठा में,